ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अप्रैल, 2022

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अप्रैल 2022

वर्ष : 2, अंक : 16

इस अंक की रचनाएं

मेन स्टोरी

अनिल : धरती को निगल जाएगा समुंदर 10

इस अंक में खास

विज्ञान :

डॉ. शील कौशिक : डॉ. सी. वी. रमन 18

अकुज : वह लंबे बालों वाला 30

कुछ नया :

एक कदम आगे रहें 20

कार्टून :

पंकज राय : रेस का राज 33

धारावाहिक उपन्यास :

डॉ. विमला भंडारी : नानी के अंडे 36

प्रकृति के सितारे :

बड़ी मेहनती गिलहरी 40

खेल :

महिला विश्वकप क्रिकेट 44

सैर-सपाटा :

टॉय ट्रेन के मजे 48

देश-विदेश :

शैडो पपेट 51

पुस्तक परिचय :

पढ़ो-पढ़ाओ 52

बाल मंच

कविताएं :

रुषिता वेदुला : चिड़िया 54

साक्षी भंडारी : उड़ने को तैयार 55

बबीता जोशी : दोस्त और दोस्ती 55

कहानियां

अनिल जायसवाल : नाच उठी धरती 6

समीर गांगुली : बछड़े ने लिखा निबन्ध 12

संजीव जायसवाल 'संजय' : सजा सोशल वर्क की 14

अलका प्रमोद : मम्मी की तरकीब 22

डॉ अलका अग्रवाल : भीमा 24

रेनू सैनी : पानी की घंटी 28

सुधा भार्गव : गौरी की नूरी 34

शिखर चंद जैन : डॉग फूड बैंक 42

सुकीर्ति भटनागर : नाम का चक्कर 46

कविताएं

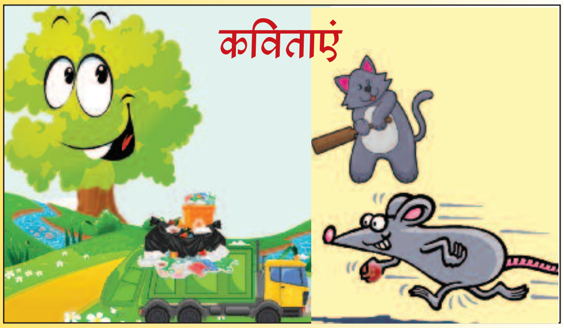

सन्तोष कुमार सिंह : झटपट आग बुझाती दमकल 5

शादाब आलम : धरती पर ही सब कुछ 9

रावेंद्रकुमार रवि : पेड़ की खुशी 17

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' : कैट वर्सेज रैट 21

श्रवण कुमार सेठ : चटर-पटर 26

महेंद्र देवांगन 'माटी' : माटी पुत्र 27

वसीम अहमद नगरामी : होमवर्क 38

राजकुमार निजात : कोई पेड़ लगाओ तुम 39

संपादकीय

खतरे में हैं प्यारी धरती मां

आज इनसान और उसके साथ उसकी प्यारी धरती मां खतरे में है। और यह खतरा कोई अनजाना या आसमानी नहीं है, यह उसकी खुद की बुलाई गई मुसीबत है। प्रकृति ने हमें इतनी सुंदर पृथ्वी दी, जंगल दिए, खूबसूरत जीव-जंतु दिए। पर हमने दमघोटू जहरीला वातावरण, खूबसूरत जंगलों को उजाड़कर पथरीले शहर बनाए। पशु-पक्षियों को मारकर हम उन्हें खत्म करते जा रहे हैं। एक-दूसरे पर बमबारी कर शहरों के साथ सभ्यताओं को उजाड़ रहे हैं। विकास के नाम पर हम हर वो काम करने को तैयार हैं, जो हमें भी पृथ्वी से विलुप्त कर दें। इससे होगा क्या? होगा यह कि हमारे लिए रोने वाला भी कोई नहीं बचेगा।

पिछला मार्च शायद पिछले सौ सालों में सबसे गरम मार्च रहा। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र की नई रिपोर्ट में कहा गया है कि यदि हम ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 प्रतिशत तक सीमित रखना चाहते हैं, तो आज का समय अभी नहीं, तो कभी नहीं वाला है। यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि 200 साल में पृथ्वी पर एक प्रतिशत तापमान में अंतर आ पाता है और इस अंतर को हम अपने लोभ में घटाकर 20 वर्षों पर ले आए।

अगर ग्लोबल वार्मिंग जारी रहा, तो पानी ही हमारे लिए विनाशकारी होगा। कमाल की बात यह है कि पानी कम हो, तो भी इनसान की जिंदगी खतरे में पड़ जाती है और पानी ज्यादा हो, तो भी इनसान की ही जिंदगी खतरे में आ जाती है। या तो हम प्यासे मरेंगे या फिर डूबकर।

कोरोना का खौफ कम हुआ, तो महंगाई और युद्ध ने लोगों का खौफ में लाना शुरु कर दिया है। रूस-यूक्रेन युद्ध रुकने का नाम नहीं ले रहा। रूसी सैनिक हैवानियत पर उतर आए हैं, तो विश्व पर प्रभाव रखने वाले इंग्लैंड और अमेरिका जैसे देशों की दिलचस्पी युद्ध रोकने से अधिक उसे भड़काकर महाशक्ति रूस को अलग-थलग करने में है ताकि वे अपनी रोटियां सेक सकें।

अपनी नीतियों के कारण भारत के तीन पड़ोसी देश बर्बादी और कंगाली के कगार पर खड़े हैं। अफगानिस्तान के नागरिक अपने शासक तालिबान से परेशान हैं, तो पाकिस्तान में इमरान खान की सरकार जा चुकी। श्रीलंका दिवालिया होने के कगार पर है और वहां गृहयुद्ध शुरु हो चुका है।

आज इस नाउम्मीदी के दौर में अब तुम बच्चे ही उम्मीद की किरण हो। तुम सब बड़े होकर अपनी धरती, अपनी पृथ्वी और राष्ट्र के साथ अपने परिवार का भी ध्यान रखना। अपना फायदा सबसे बाद में देखना।

20 अप्रैल को पृथ्वी दिवस है। सभी पृथ्वीवासियों को बधाई और सबसे प्रार्थना कि पृथ्वी को नुकसान पहुंचाना बंद करें क्योंकि इस नुकसान की भरपाई हम कभी नहीं कर पाएंगे।

अनिल जायसवाल

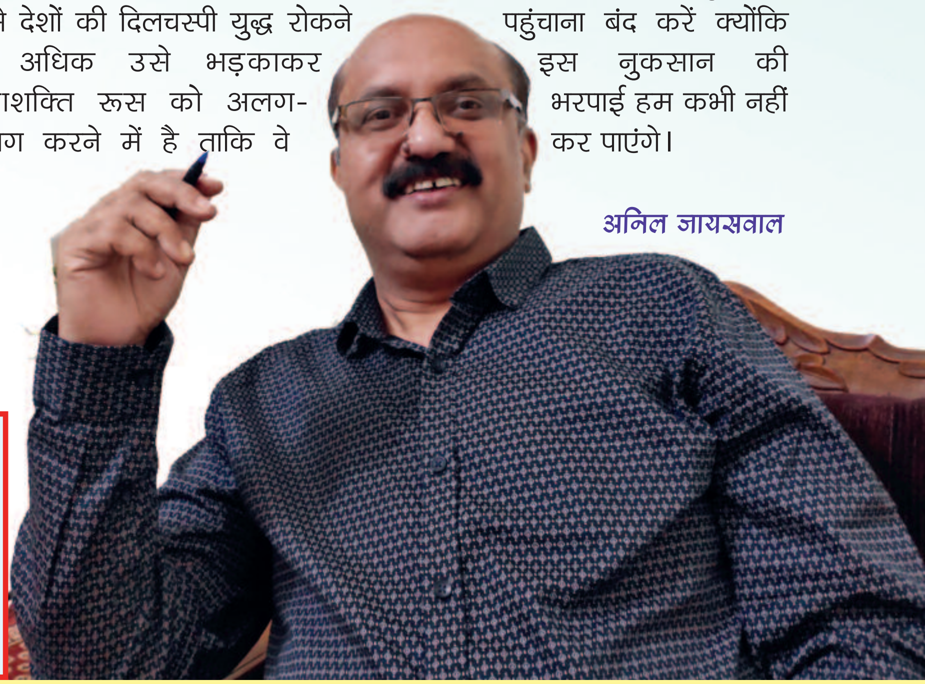

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल
कविता सलाहकार : संतोष कुमार सिंह
कवर चित्र : टीम पायस

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. रेनू मंडल
3. डॉ. अनुपमा गुप्ता

जिनकी वार्षिक सदस्यता के 12 महीने हो गए हैं, उनसे अनुरोध है कि फिर से मदद करें

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

एक अपील

वार्षिक सदस्य बनकर पत्रिका को आगे बढ़ाने में मदद करें

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

14 अप्रैल : अग्नि सुरक्षा दिवस पर

झटपट आग बुझाती दमकल

आनन-फानन आती दमकल।
झटपट आग बुझाती दमकल।।

राह मिले जल्दी जाने की,
घंटी सदा बजाती दमकल।

कुछ पानी वह भर कर लाती,
उससे काम चलाती दमकल।

मिले स्रोत पानी पाने का,
जल्दी जुगत लगाती दमकल।

ऊँची-ऊँची रखे सीढ़ियाँ,
ऊँचे तक पहुँचाती दमकल।

लगी आग विद्युत यंत्रों में,
गैस सिलेंडर लाती दमकल।

यह जनता की अति हितकारी,
धन-जन हानि बचाती दमकल।

अपने लेखक को जानिए

सन्तोष कुमार सिंह : सेवानिवृत्त इंजीनियर। अब स्वतंत्र लेखन। बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां और बाल पहेलियां लेखन। बाल साहित्य की 29 पुस्तकें प्रकाशित।

कहानी

नाच उठी धरती

अनिल जायसवाल

गरमी के दिन थे, सुबह से ही चहल-पहल शुरू हो गई थी। रोहन हर रोज की तरह सोसाइटी के अपने फ्लैट से बाहर निकलकर स्कूल बस के इंतजार में सोसाइटी के गेट बाहर खड़ा हो गया। तभी हल्ला सा मचा। सोसाइटी के सामने खाली पड़ी जमीन पर बसी झोपड़पट्टी में से लोग हाथों में बालटी, केन इत्यादि लेकर सड़क की तरफ भागते दिखाई दिए।

'लगता है, रोज की तरह वॉटर टैंकर आ गया।' सोचते हुए उसने बाईं तरफ की सड़क पर नजर डाली। सरकारी वॉटर टैंकर आकर खड़ा हुआ ही हुआ था कि वहां पानी लेने के लिए लोग रोज की तरह झगड़ने लगे थे।

"क्या देख रहे हो रोहन बेटा?" कहते हुए सोसाईटी के गेटकीपर अब्दुल चाचा उसके पास

चित्र : नीतू खोहवाल

आ खड़े हुए। वह भी उसी झोपड़पट्टी का हिस्सा थे। अब सोसाइटी में नौकरी हो जाने से सोसाइटी के ही सर्वेंट क्वार्टर में रहने लगे थे।

"चाचा, ये पानी के लिए लड़ते क्यों है?" रोहन को बाहर के दृश्य बड़ा अजीब लग रहा था।

"बेटा हमारे शहर में पानी की स्थिति खराब होती जा रही है। एक तो इस शहर के पास कोई नदी नहीं है और..." अब्दुल कुछ और बताता, तब तक बस आ गई और रोहन बस पकड़ने भागा और बस में चढ़ गया। वह बस से भी पानी के लिए लड़ते लोगों को देखता रहा।

स्कूल में पढ़ते समय उसके दिमाग में यही बातें घुमड़ती रहीं। साइंस के टीचर अनुपम सर आए, तो उसने सर को सारी बात बताकर कारण पूछा।

"देखो बच्चो।" अनुपम सर ने बताना शुरू किया, "हमारे शहर में पानी की स्थिति बहुत खराब हो चुकी है। हमारा शहर ऐसी जगह बसा है, जिसके आसपास कोई नदी नहीं है। हमारे लिए पानी दूसरी जगहों से लाकर स्टोर करके घरों तक भेजा जाता है।"

"पर सर, बारिश का पानी भी तो है।" रोहन ने पूछा।

"वही बता रहा हूं। हमारा शहर अब इतना ज्यादा एडवांस हो गया है कि यहां खुली धरती के नाम पर कुछ पार्क ही रह गए हैं। बस चारों ओर सीमेंट और कंक्रीट दिखाई देता है। हम लोग इतने लापरवाह हैं कि बारिश के पानी को स्टोर करने में भी लापरवाही बरतते है। होता यह है कि यहां बारिश तो खूब होती है, परंतु सोखने के लिए खुली जमीन न होने के कारण सारा पानी बह जाता है। कहने के लिए थोड़ा बहुत पानी ही ही वाटर हार्वेस्टिंग के नाम पर हम स्टोर करते हैं। पिछले 2 सालों से शहर में पानी बहुत कम बरस रहा है। और यह स्थिति तकरीबन हमारे आसपास के सभी क्षेत्रों में है। तो जिन क्षेत्रों से हमारे यहां पानी भेजा जाता था, वहां भी पानी की कमी हो रही है। इसलिए अब वे भी हमें कम पानी भेज रहे हैं। शहर में पानी की किल्लत है क्योंकि जमीन के नीचे भी पानी कम हो रहा है। अब बोरिंग का पानी भी नहीं निकलता। आज से दो चार साल पहले यही स्थिति दक्षिण अफ्रीका के एक शहर केपटाउन की हो गई थी। और उसे दुनिया का पहला बिना पानी वाला शहर घोषित कर दिया गया था। मुझे डर है कि हम अपनी नासमझी से अपने शहर को भी उसी श्रेणी में ला खड़ा कर चुके हैं।"

अब रोहन के समझ में सारी बातें आ रही थीं। घर में भी मां वही बातें कहती रहती थीं, जो सर भी कह रहे थे। सारे दिन स्कूल टाइम में भी वह इसी बारे में सोचता रहा।

शाम को रोहन स्कूल से घर लौटा, तो घर में घुसते ही चिट पर उसे लिखा मिला, 'खाना खा लेना और पानी की बर्बादी मत करना। आज पानी वाले ने भी पानी की बोतल नहीं दिए।'

रोहन के मम्मी-पापा ऑफिस में काम करते थे। दोपहर में खाना खाकर रोहन सो गया। शाम को रोहन सोसायटी के पार्क में खेलने गया, तो देखा पार्क की हरी घास सूख गई थी। पेड़ पर पत्ते भी काफी कम रह गए थे। उसने अब्दुल को आवाज लगाई और पूछा, "आजकल माली अंकल नहीं आ रहे हैं क्या? सारे घास सूख गई है?"

"बेटा, वह तो हर दूसरे दिन आते हैं, परंतु वह भी क्या करें? पेड़ों और घास को देने के लिए पानी ही नहीं है। अपने पंप में अब पानी नहीं आता।"

उस दिन खेल में रोहन का मन नहीं लगा। हमेशा की तरह वह उस पेड़ के पास गया, जिस पर उसने और उसके दोस्त ने झूला टांग रखा था। पेड़ पर अब तो दो-चार पत्ते ही रह गए थे। अकेले रोहन ने दुखी मन से पेड़ को देखा और साथ लाए बोतल से प्यास लगने पर थोड़ा पानी पिया फिर हमेशा की तरह पेड़ के पास एक जगह पर पानी डाला। यह उसका रोज का नियम था।

रोहन भारी मन से घर लौट आया। थोड़ी देर बाद उसके मम्मी-पापा आ गए। मम्मी बड़बड़ा रही थी, "इस शहर से कहीं और ट्रांसफर करा लेते हैं। अब इस शहर में गुजारा होना मुश्किल है।"

"अरे, मैं तो कहता हूं, चलो, अपने छोटे से शहर में वापस चलते हैं, वहां आज भी लोग सुख-चैन से हैं।"

"मम्मी यह पानी की प्रॉब्लम कब खत्म होगी? सब परेशान है।" रोहन ने पूछा।

"बेटा, यह सब तो हम सबका किया धरा है। न पानी की बर्बादी करते और न यह हाल होता। अब तो बादल देवता का ही आसरा है। पर वह बरसे, तो भी कुछ दिन काम आएंगे। जब तक हम पानी के महत्त्व को नहीं समझेंगे, हर साल यही स्थिति होगी।"

ऐसे ही कुछ दिन गुजरे। स्कूल में गरमी की छुट्टियां हो गई थीं और रोहन का स्कूल जाना बंद हो गया था। बाहर झोंपड़पट्टी वालों के लिए अब रोज के बदले में 3 दिन में एक टाइम पानी आता था और इसी तरह 3 दिन की लड़ाई एक ही दिन होने लगती थी।

एक सुबह रोहन उठा और हमेशा की तरह बालकनी में जाकर खड़ा हो गया। आज खूब गरमी थी और बाहर वीरानी छाई होती हुई थी। लगता नहीं था कि जैसे इस शहर में इनसान भी बसते हैं।

रोहन ने पानी की बोतल की तरफ देखा, उसमें आधा पानी रह गया था। उसने बोतल खोलकर पानी पीया और सोचने लगा, 'बाहर खेलने जाऊं या ना जाऊं?'

तभी उसके पापा आकर बोले, "बेटा, हम कुछ ही दिनों में यहां से दूर अपने छोटे से शहर चले जाएंगे। वहां आज भी इंसान के जीने के लिए पानी उपलब्ध है। हमने ट्रांसफर के अर्जी दे दी है। कुछ दिनों में ट्रांसफर आर्डर आ जाएंगे।"

पर रोहन कुछ नहीं बोला। यह समस्या का समाधान नहीं, उससे मुंह मोड़ना था। उसने मुंह फेर लिया और नीचे गार्डन की ओर देखा। गार्डन में सारे पेड़ सूख चुके थे। दूर उसका झूले वाला पेड़ अब हरे- भरे पेड़ की जगह ठूंठ लग रहा था।

तभी एक चिड़िया उड़ती हुई आई और बालकनी में आ बैठी। उसे देखकर लग रहा था कि उसे प्यास लगी है। रोहन ने कुछ सोचा और बोतल का पानी पंछियों के लिए रखे बर्तन में डाल दिया। चिड़िया खुशी से पानी पीकर नाचने लगी।

"चलो बेटा, रोहन नाश्ता कर लो।" पापा ने आवाज लगाई। पर रोहन ने पानी के बोतल में पानी भरा और घर से बाहर निकलने लगा।

"कहां जा रहे हो बेटा?" मम्मी ने पूछा

"बस मम्मी, जरा गार्डन से होकर आता हूं। मेरा पेड़ सूख रहा है। उसे भी प्यास लगी होगी।" कहते हुए रोहन बाहर आया। लिफ्ट में सवार होकर वह नीचे उतरने लगा। लिफ्ट से उतरते समय उसे बाग में लगे पेड़ और उस पर डाले गए झूले की याद आने लगी।

'तो क्या, सचमुच मेरा शहर ऐसे शहर की लिस्ट में आने वाला है जहां पानी नहीं होगा।' सोचते-सोचते उसकी आंखों में आंसू आ गए। बाहर उसके दोस्त इंतजार कर रहे थे।

"चल रोहन झूला झूलते हैं।" उसका दोस्त अंकित बोला।

रोहन भारी कदमों से दोस्तों के साथ बगीचे की ओर चल पड़ा। देखा, जिस पेड़ पर झूला था, तो अब बिल्कुल ठूंठ बन चुका था। उस पेड़ के पास गार्ड अब्दुल चाचा बैठे थे।

"चाचा, मेरे इस पेड़ को क्या हो गया?" पेड़ पर हाथ फेरते हुए रोहन ने कहा।

"बेटा, बिना पानी के यह सूख रहा है। हमारी पीढ़ी ने तो इस धरती को बर्बाद कर दिया। धरती की जान हरियाली होती है और हरियाली के लिए पानी की जरूरत होती है। जब पानी नहीं है, तो हरियाली कैसे होगी? अब तो लगता है, जैसे धरती भी नाराज है।"

"देखना चाचा, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा, तो सब को समझाऊंगा कि धरती को कभी दुखी ना करें। मम्मी तो कहती हैं, धरती हमारी मां है और मां को दुखी करना गंदी बात है।" कहते हुए रोहन की आंखों में

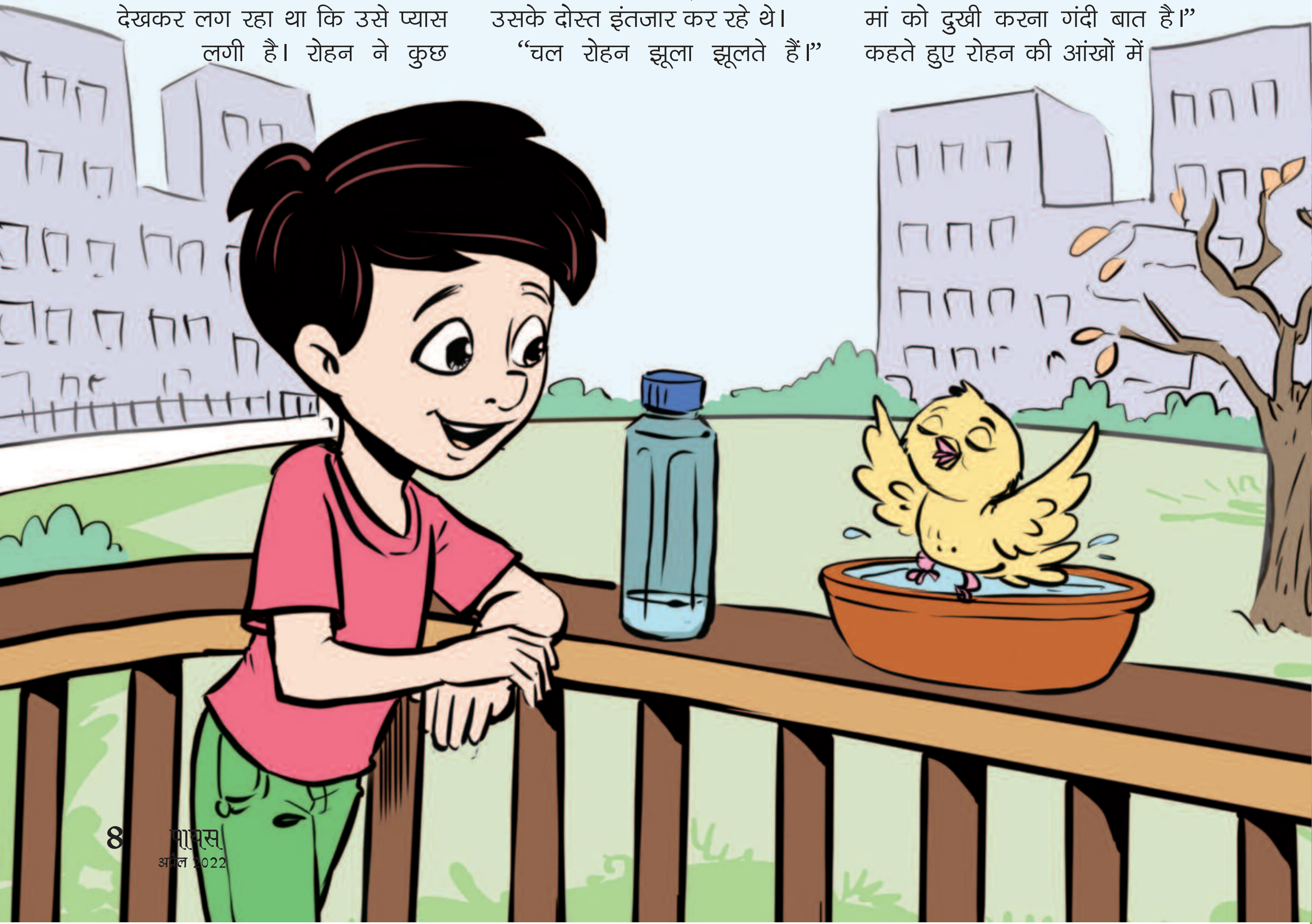

आंसू आ गए।

"अरे रोहन, वह देख, क्या है?" तभी अंकित चिल्लाया।

अब रोहन का ध्यान सूखे पेड़ के पास एक छोटे से पौधे पर गया। ना जाने कैसे इतनी गरमी में भी वह छोटा सा पौधा उग आया था।

पिंकी ने भी देखा, तो बोली, "अरे, यह पौधा कहां से आ गया? बड़ी अजब बात है।"

अब्दुल चाचा ने पौधे को देखा, तो बोले, "यह तो आम का पौधा है। तुम में से किसी ने आम खाकर उसकी गुठली यहीं फेंक दी होगी।"

रोहन को याद आया, एक दिन उसने ही आम की गुठली यहां दबाई थी। वह रोज खेलते के बाद पानी पीते समय थोड़ा-बहुत पानी वहां पर डाल देता था।

"मैंने यहां गुठली दबाई थी। देखना चाहता था कि उससे क्या होता है।" कहते हुए रोहन उस नन्हे से पौधे के पास बैठ गया। अब उसकी समझ में आया, प्यार पाकर एक नन्हा पौधा उग गया था। कुछ सोच कर उसने अपनी बोतल का सारा पानी उस पौधे पर डाल दिया।

रोहन को बुलाने तब तक उसके पापा आ गए थे। उन्होंने यह सब देखा, तो रोहन के कंधे पर हाथ रखकर बोले, "बेटा, अब हम कहीं नहीं जाएंगे। जैसे तुम एक पौधे का ध्यान रख रहे हो, ऐसे अगर हम सब पेड़-पौधों का ध्यान रखें, तो धरती मां फिर से हमारे साथ होंगी।"

"हां अंकल, अब हम लोग पानी की बर्बादी नहीं करेंगे और धरती का ध्यान रखेंगे।" कहते हुए पिंकी ने आकाश की ओर देखा, आकाश में अंधेरा छा रहा था क्योंकि वहां बादलों का जमावड़ा होने लगा था।

अब्दुल चाचा खुशी से बोले, "देखो बच्चो, प्यार का कमाल। तुमने एक पौधे से प्यार दिखाया, तो यह प्रकृति कैसे हम सब का साथ देने के लिए तैयार हो गई। मुझे उम्मीद है कि अब धरती मां की नाराजगी भी दूर हो जाएगी। पर जरूरी है कि अब हम पानी की बर्बादी को रोकें।"

"हम सब वादा करते हैं चाचा, ना पानी बर्बाद करेंगे ना लोगों को करने देंगे। पानी ही हमारा जीवन है, अब यह बात हमारी समझ में आ गई है।" सब बच्चे एक साथ बोले।

देखते-देखते बारिश शुरू हो गई। सब ख़ुशी से नाचने लगे। इनमें बच्चे और बड़े सब शामिल थे। सभी ने मन ही मन पानी बचाने का संकल्प ले लिया था।

अब अपने बच्चों को सुधरते देख, धरती मां भी खिल उठीं। ऐसा लगा, जैसे सारी प्रकृति साथ में नाच रही हो। ❁

कविता

धरती पर ही सब कुछ

पूछ रहीं चिड़िया से बकरी, चुहिया, भेड़
आसमान में भी हैं क्या फल वाले पेड़?
पूछ रहें चिड़िया से हाथी, भालू, शेर
आसमान में भी खिलते क्या कमल, कनेर?
पूछ रहे हैं चिड़िया से लंगूर जनाब
आसमान में भी क्या हैं नदियां, तालाब?
चिड़िया बोली आसमान तो है सुनसान
धरती पर ही सब कुछ, धरती आलीशान।

शादाब आलम

20 अप्रैल : पृथ्वी दिवस पर विशेष

धरती को निगल जाएगा समुंदर

आज पृथ्वी पर सबसे बड़ा खतरा क्या है? अधिकांश कहेंगे युद्ध या विश्वयुद्ध की आशंका। पर यह सच नहीं। आज पृथ्वी पर ग्लोबल वॉर्मिंग सबसे बड़ा खतरा है। और यकीन मानो, यह परमाणु बम से भी ज्यादा खतरनाक है। परमाणु बम तो किसी इलाके को खत्म करता है, पर ग्लोबल वॉर्मिंग पूरी दुनिया को खत्म कर देगी। आओ, इसके बारे में जानें।

पानी ही पानी, पर रहेंगे प्यासे

संसार की आबादी बढ़ती जा रही है। कई देशों के पास जगह की कमी हो रही है। पूरी धरती पर रहने के लिए जमीन की मात्रा केवल 30 प्रतिशत ही है। बाकी जगह तो पानी है, समुद्र है।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण पूरी दुनिया में तापमान असमान हो रहा है बहुत दिनों से तापमान में तेजी से वृद्धि हो रही है। अपने भारत में तापमान में बढ़ोत्तरी चिंता का कारण है। हिमालय क्षेत्र में स्थित करीब 24000 ग्लेशियर और ग्लेशियर लेक खतरे में हैं। इनमें से आधों के सन 2050 तक लुप्त हो जाने का अंदेशा है। अधिकांश 2100 तक खत्म हो जाएंगे।

और यह सब प्रदूषण और ग्रीन हाऊस गैसों के कारण हो रहा है। हमारे वाहनों से निकलने वाला धुआं और कारखानों से निकलने वाले धुएं से कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही है, जिसके कारण धरती का तापमान पिछले 40 वर्षों में करीब 1 डिग्री बढ़ गया है। इस कारण ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जा रही है। प्राकृतिक तौर पर पृथ्वी को एक डिग्री ठंडा या गर्म होने के लिए हजारों साल लग जाते हैं। ग्लेशियरों के खत्म होने से जहां समुद्र का जल स्तर बढ़ जाएगा वही पीने के पानी की किल्लत हो जाएगी।

धरती को निगल जाएगा समुंदर

जब ग्लोबल वार्मिंग के कारण सारे हिमनद पिघलने लगेंगे, तो पानी अंत में समुद्र में जाकर मिलेगा। धरती का जो भाग समुद्र के पास है, वहां समुद्र किनारे बसे शहर खतरे की जद में आ जाएंगे। थाईलैंड, सिंगापुर, मुंबई इत्यादि आने वाले समय में इतिहास में नजर आएंगे।

पिछले करीब डेढ़ सौ वर्ष में समुद्र के जल स्तर में 20 सेंटीमीटर की वृद्धि हो चुकी है जबकि अंदेशा है कि आने वाले 100 साल में समुद्र के जलस्तर में 88 सेंटीमीटर तक की बढ़ोत्तरी हो सकती है, जो एक खतरनाक स्थिति हो जाएगी।

ओज़ोन परत में छेद

ओजोन परत पृथ्वी और पर्यावरण के बीच एक सुरक्षा कवच का कार्य करती है और सूर्य की खतरनाक अल्ट्रावायलेट किरणों से बचाती है परंतु पिछले कई वर्षों से वैज्ञानिकों का कहना है कि ओजोन लेयर में छेद होने लगे हैं। इस कारण अल्ट्रावायलेट किरणें सीधे धरती पर आ रही हैं। इस कारण इनसानों में कई तरह की बीमारियां हो जाती हैं। ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में लोग त्वचा कैंसर के शिकार हो रहे हैं

क्योंकि वहां ओजोन परत में छेद होने से खतरनाक किरणें सीधे लोगों को बीमार कर रही हैं।

वायु प्रदूषण

हर वर्ष पूरी दुनिया में वायु प्रदूषण के कारण 20 लाख से ज्यादा लोग मृत्यु की चपेट में आ जाते हैं और यह आंकड़ा बढ़ता ही जा रहा है। वायु प्रदूषण को बढ़ाने में कल-कारखानों और गाड़ियों से निकलने वाले जानलेवा धुआं और निर्माण कार्य के कारण उड़ने वाली धूल-मिट्टी इत्यादि इनसान को अंदर ही अंदर खा जाती है। इससे इनसानों में बीमारियां बढ़ रही हैं और उनकी उम्र कम हो रही है। भारत की राजधानी दिल्ली की वायु गुणवत्ता बहुत ही खराब है और इसे जानलेवा तक माना गया है। आप सोच सकते हैं कि जब दिल्ली की यह हालत है तो और जगह की क्या हालत होगी?

जल किल्लत

आने वाले समय में हिमालय पर मौजूद ग्लेशियर पिघल जाएंगे और उसका पानी जाकर समुद्र में मिल जाएगा। इस कारण पीने के पानी की किल्लत हो जाएगी। हमें पीने का पानी नदी, तालाब, कुएं और बारिश से मिलता है। दुनिया भर में केवल एक प्रतिशत जल ही पीने योग्य है और सबसे अजीब बात यह है कि इस जल का संरक्षण करने के लिए कोई भी गंभीर नहीं है। बारिश का पानी ऐसा पानी होता है, जो हमारे उपयोग कर लिए गए पानी का स्थान ले लेता है। परंतु बढ़ते शहर, कंक्रीट का जाल और पानी संरक्षण के प्रति हमारी उदासीनता के कारण यह सारा जल या इसकी अधिकांश मात्रा नदियों के द्वारा जाकर समुद्र के खारे पानी में मिल जाती है और यह जल इस्तेमाल योग्य नहीं रहता। खेती के लिए अधिकांश देश जमीन के नीचे के जल का दोहन करते हैं। बारिश का पानी फिर से जल स्तर को बढ़ा देती है परंतु यदि जमीन में पानी के जाने का रास्ता बंद कर दिया जाएगा, तो भूजल का स्तर फिर से ऊपर नहीं आ पाएगा। ऐसे में समय के साथ भूजल भी खत्म हो जाएंगे जैसा कि संयुक्त अरब अमीरात में हो चुका है।

बछड़े ने लिखा निबन्ध

कुछ देर तक दोनों एक दूसरे को देखते रहे, चुपचाप। फिर बछड़े ने मीलू से पूछा, "क्या देख रहे हो, मैं सुंदर लग रहा हूं ना ?"

मीलू चिढ़कर बोला, "फालतू बात मत करो। मैं परेशान हूं। तुम्हारी मां के कारण।"

बछड़ा हंसकर बोला," मेरी मां के कारण ? कैसे ? वजह नहीं बताओगे, तो मदद कैसे पाओगे ?"

मीलू ने समस्या बताई, "टीचर ने गाय पर निबंध लिखने को कहा है। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि क्या लिखूं।"

बछड़ा बोला, "मैंने कभी ग्वाले यानी तुम्हारे पिता पर निबंध सोचा था। वही सुनाता हूं, थोड़ा बदल लेना, फिर तुम्हारे पिता पर मेरा निबंध, मेरी मां पर लिखा तुम्हारा निबंध बन जाएगा।"

मीलू बुद्धू की तरह बछड़े की तरफ देखते हुए बोला, "तो सुनाओ।"

और फिर बछड़े ने ग्वाले पर अपना निबंध यूं सुनाना शुरू किया, "हमारे पास एक ग्वाला है। उसके दो हाथ और दो पैर हैं। मगर ग्वाले के न तो सींग हैं और न ही पूंछ। भगवान ने ग्वाले को न तो आत्मरक्षा के लिए कोई अंग दिया है और न ही मक्खी उड़ाने के लिए पूंछ।"

मीलू मन ही मन उसी तर्ज पर गाय पर निबंध तैयार करने लगा, "हमारे पास एक गाय है। उसके चार पैर हैं। गाय के दो सींग और एक पूंछ होती है। सींग आत्मरक्षा और पूंछ मक्खी उड़ाने के काम आती है।"

बछड़े ने आगे कहना जारी रखा, "ग्वाला दूध नहीं देता है और उसका गोबर भी किसी काम नहीं आता है। उलटे वह बहुत ही बदबूदार होता है। ग्वाला न तो गाड़ी खींच सकता है और न ही हल में जुत कर खेत की जुताई कर सकता है।"

मीलू ने आगे लिखा," गाय से हमें दूध मिलता है। दूध से दही, मक्खन, घी बनता है। गाय के बछड़े बैलगाड़ी चलाते हैं। खेत में हल जोतते हैं।"

बछड़ा ग्वाले के काम के बारे में रुक कर थोड़ी देर सोचने लगा, फिर आगे बोला, "ग्वाला घास-पात नहीं खाता है, मगर पक्षियों के अंडों से लेकर बहुत से पशुओं का मांस भी खाता है। ग्वाला जुगाली नहीं करता है। पता नहीं, वह कभी-कभी क्या खाता है कि लाल थूकता है। लेकिन ग्वाले की पत्नी यह सब नहीं खाती है। ग्वाले में हमारे प्रति दया बिल्कुल नहीं है। हम उसके इतना काम आते हैं फिर भी वह हमें कष्ट देता है।"

अब मीलू को भले ही बछड़े की ये बातें पसंद नहीं आईं, मगर निबंध को पूरा करने की खातिर उसने आगे लिखा, "गाय घास-पात और भूसा-दाना खाकर हमें मीठा दूध देती है। खाने को हजम करने के लिए गाय जुगाली करती है। इसीलिए उसे बदहजमी नहीं होती। वह बहुत रहम दिल होती है। बेवजह किसी को सींग नहीं मारती। गाय को इसलिए हम गाय माता भी कहते हैं।"

बछड़े के स्वर में अब और कड़वापन आ गया था, उसने आगे कहा, "ग्वाला मुझे और मेरी मां को रस्सी से बांधकर रखता है। हमें इतनी भी आजादी नहीं है कि हम अपनी मर्जी से घूम सकें और अपने दूसरे पशु-साथियों से मिलने जा सकें। अगर मेरा वश चले, तो मैं भी ग्वाले और उसके बच्चे की गर्दन में रस्सी बांधकर उन सबको खूंटें से बांधकर रखूं।"

इतना कहकर बछड़ा रुक गया और कुछ पलों की खामोशी के बाद बोला, "लिखो, रुक क्यों गए? सच नहीं लिख पाओ, तो झूठ ही लिख दो। लिखना जब तक मनुष्यों के हाथ में है तब तक तो गाय पर ही निबंध लिखा जाएगा। लेकिन जरा सोचो, अगर किसी दिन किसी बछड़े, गाय या मुर्गी को लिखना आ गया और उनका लिखा निबंध दुनिया ने पढ़ लिया तो क्या होगा।"

और इसके बाद मीलू आगे निबंध नहीं लिख सका और न ही वह कभी बछड़े के साथ आंखें मिला सका। ❁

अपने लेखक को जानिए

समीर गांगुली : हिंदी बाल साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले समीर गांगुली की कहानियां तकरीबन हर प्रतिष्ठित बाल पत्रिका में स्थान पाती रही हैं। दो दशक तक सार्वजनिक क्षेत्र की एक बीमा कंपनी में नौकरी के बाद अब पूरी तरह से हिंदी विज्ञापन लेखन का कार्य करते हैं।

सजा सोशल वर्क की

पिंटू हिरन का बेटा चिंपू अचानक बीमार हो गया था। डाक्टर लंगूर ने आपरेशन करवाने की सलाह दी। इसमें काफी खर्चा होना था।

पिंटू ने अपने कुछ दोस्तों से उधार लिया लेकिन इतने रुपए जमा नहीं कर पाया कि चिंपू का आपरेशन करवाया जा सके। परेशान पिंटू किसी से कर्ज लेने की सोच रहा था।

अचानक एक सुबह उसके मोबाइल की घंटी बजी, "हैलो, क्या आप पिंटू सर बोल रहे हैं?" उधर से आवाज सुनाई पड़ी।

"जी।" पिंटू ने कहा।

"बधाई हो सर, आपकी पांच लाख रुपए की लॉटरी निकली है।" फोन करने वाले ने सम्मानित स्वर में कहा।

"लेकिन मैंने तो किसी लॉटरी का टिकट खरीदा ही नहीं, फिर लाटरी कैसे निकल सकती है?" पिंटू आश्चर्य से भर उठा।

"आपने पिछले महीने हमारी कंपनी से एक मिक्सी ऑनलाईन खरीदी थी। कंपनी ने अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए एक अभियान शुरू किया था। उसमें कई ग्राहकों की लाटरी निकाली गई है, जिसमें सबसे बड़ा ईनाम आपका निकला है।" उसने बताया।

"सच।" पिंटू खुशी से झूम उठा। उसकी सारी समस्या हल हो गई थी।

"बिल्कुल सच।" फोन करने वाला हलका सा हंसा, फिर बोला, "सर, हम पांच लाख रुपए आपके खाते में ऑनलाईन भेजना चाहते हैं। इसलिए आप अपने बैंक का नाम और खाते का नंबर हमें बता दीजिए।"

पिंटू ने खुशी-खुशी अपने बैंक का नाम और खाते का नंबर बता दिया, तो फोन करने वाले ने कहा,' 'सर, लाईन पर बने रहिएगा। आपके मोबाइल पर अभी एक ओटीपी नंबर आएगा उसे बता दीजिएगा। उसे मैं अपने कंप्यूटर में फीड करूंगा, तो फटाक से पांच लाख रुपए आपके खाते में पहुंच जाएंगे।"

थोड़ी ही देर में पिंटू के मोबाइल में एक ओटीपी नंबर आ गया। पिंटू ने उसे बता दिया। उसे विश्वास था कि थोड़ी ही देर में उसके खाते में पांच लाख रुपए जमा होने का मैसेज आ जाएगा।

किंतु जो मैसेज आया, उसे देख पिंटू के होश उड़ गए। उसने दोस्तों से मांगकर दो लाख रुपए अपने बैंक खाते में जमा किए थे, वे सब निकल

गए थे। घबराए पिंटू ने उस नंबर पर फोन मिलाया लेकिन वह मोबाइल स्विच ऑफ हो चुका था।

पिंटू समझ गया कि वह ठगी का शिकार हो गया है। वह रोने-चिल्लाने लगा, "हाय, मैं लुट गया। बर्बाद हो गया। अब मेरे बेटे का आपरेशन कैसे होगा।"

शोर सुनकर उसके पड़ोसी आ गए। सभी ने पिंटू को महराज शेर सिंह से शिकायत करने की सलाह दी। पिंटू रोता-पीटता शेर सिंह के पास पहुंचा। वे दरबार में एक ऊंचे सिंहासन पर बैठे हुए थे।

पूरी बात सुन शेर सिंह का चेहरा गंभीर हो गया। उनके पास इस तरह की ठगी की शिकायतें पहले भी आ चुकी थीं। किंतु आज तो हद हो गई थी। बेचारे पिंटू को बेटे का आपरेशन करवाने के लिए और रुपयों की जरूरत थी और उसके ही सारे रुपए गायब हो गए। उन्होंने जंगल वासियों की सुविधा के लिए सरकारी बैंक खुलवाया था। किंतु ऐसी घटनाओं से तो लोगों का बैंक पर से विश्वास ही उठ जाएगा।

उन्होंने वहां बैठे दरबारियों की ओर देखा, फिर बोले, "इस तरह की ठगी की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। आप लोगों में से जो इस ठग को पकड़वा देगा, उसे भारी ईनाम दिया जाएगा।"

दरबारी भी ऐसी ठगी की शिकायतें सुन चुके थे। किंतु उन्हें कंप्यूटर की ज्यादा जानकारी नहीं थी इसलिए किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि इस ऑन लाईन ठग को कैसे पकड़ा जाए।

संयोग से उसी समय महाराज शेर सिंह का बेटा टाईगर सिंह दरबार में आया। पूरी बात समझ उसने कहा, "महाराज, जिन लोगों के साथ ऐसी ऑनलाईन ठगी हुई है, क्या उनके नाम और उनके बैंक खातों का विवरण मुझे मिल सकता है?"

"मैं उसकी जांच करवा चुका हूं। जितने की शिकायत उन लोगों ने की थी, उतनी रकम उन सबके खातों से गायब हुई है।" शेर सिंह ने बताया।

"मैं फिर भी उन सबके बैंक खातों का विवरण एक बार देखना चाहता हूं।" टाईगर सिंह ने अनुरोध किया।

शेर सिंह ने अपने बेटे को उच्च शिक्षा दिलवाई थी। उन्हें उसकी योग्यता पर पूरा भरोसा था। अतः उन्होंने थोड़ी ही देर में बैंक से सभी का विवरण मंगवा दिया। टाईगर सिंह काफी देर तक उन कागजों को देखता रहा। बीच-बीच में वह उन कागजों में कहीं-कहीं पर लाल पेन से गोला बनाता जा रहा था। दरबारियों को लग रहा था कि वह केवल अपना समय बर्बाद कर रहा है। इन कागजों से कुछ नहीं निकलने वाला।

"पिताजी, इस ठगी में आपके बैंक का कोई कर्मचारी शामिल है।" अचानक टाईगर सिंह ने कागजों से सिर उठाते हुए कहा।

"यह तुम कैसे कह सकते हो? ऑनलाईन ठगी तो दुनिया के किसी कोने में बैठा ठग कर सकता है।" शेर सिंह ने कहा।

"आप खुद देख लीजिए, जितने भी लोग इस ठगी का शिकार हुए हैं उन सबके खाते में उससे एक दिन पहले भारी रकम जमा हुई थी।" टाईगर सिंह ने उन कागजों को शेर सिंह की ओर बढ़ाया, फिर बोला, "मैंने उस रकम को जमा करने की इंट्री और उसके अगले ही दिन ठगी से निकाली गई रकम की इंट्री पर लाल गोला बना दिया है।"

शेर सिंह ने उन कागजों को ध्यान से देखा फिर गंभीर स्वर में बोले, "लेकिन इससे यह कहां साबित होता है कि ठगी में हमारे बैंक के किसी कर्मचारी का हाथ है?"

"ऑनलाईन ठग किसी को भी, किसी भी दिन ठगी का शिकार बनाने की कोशिश कर सकते हैं लेकिन..."

"लेकिन क्या?" शेर सिंह ने टोका। उन्होंने अपने बैंक में सभी विश्वस्त लोगों को नौकरी पर रखा था। उनका मन यह मानने के लिए तैयार नहीं हो रहा था कि उनमें से कोई ठगी भी कर सकता है।

"लेकिन यहां जिस दिन भी किसी के खाते में बड़ी रकम जमा की गई, उसके अगले ही दिन वह ठगी का शिकार हो गया। इसका मतलब ठगों को बैंक के ही किसी कर्मचारी से खाते में बड़ी रकम जमा होने की सूचना मिलती है।" टाईगर सिंह ने अपना संदेह जाहिर किया।

यह सुन शेर सिंह का चेहरा गंभीर हो गया। उन्हें लगने लगा कि टाईगर सिंह की बात सही हो सकती है। कुछ देर सोचने के बाद वह बोले, "लेकिन उस कर्मचारी का पता कैसे लगेगा?"

अपने लेखक को जानिए

संजीव जायसवाल 'संजय' : 40 वर्षों से साहित्य साधना में लीन। रेलवे से निदेशक के पद से सेवानिवृत्त के पश्चात पूरी तरह साहित्य को समर्पित। अब तक 1000 से अधिक कहानियां और 60 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। इनकी एक पुस्तक का विश्व की 124 भाषाओं में अनुवाद हुआ।

"उसका पता मैं लगा लूंगा। बस आप बैंक के सभी कर्मचारियों के मोबाइल की कॉल डिटेल्स मुझे मंगवा दीजए।" टाईगर सिंह ने कहा।

शेर सिंह ने उसी दिन शाम तक सभी की कॉल डिटेल्स मंगवा दी। टाईगर सिंह आधी रात तक उन्हें ध्यान से देखता रहा फिर लंबी तानकर सो गया।

अगले दिन वह दरबार पहुंचा और उन कॉल डिटेल्स को आगे बढ़ाते हुए बोला, "यह देखिए। जिस दिन भी कोई ठगी का शिकार हुआ है, उससे एक दिन पहले डिंकी हिरन ने कालू लोमड़ को फोन किया है।"

"लेकिन डिंकी तो बहुत सीधा और मेहनती कर्मचारी है। हो सकता है, उसने किसी काम से कालू को फोन किया हो।" शेर सिंह बोले।

सेनापति चीता सिंह कल से टाईगर सिंह की बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे। उन्हें उसकी बातें सही लग रही थीं। अतः वह खड़े होते हुए बोले, "महाराज, एक, दो बार किसी को फोन किया जा सकता है, लेकिन हर ठगी से पहले कालू को फोन करना संयोग नहीं हो सकता।"

"लेकिन सेनापति जी, ऐसा न हो कि युवराज का अंदाजा गलत हो और एक निर्दोष कर्मचारी को सजा मिल जाए।" शेर सिंह ने अपनी चिंता बताई।

"महाराज, डिंकी तो ईमानदार कर्मचारी है, लेकिन कालू बहुत बड़ा धूर्त है। हमारे गुप्तचरों ने बताया है कि कुछ दिनों से उसके पास बहुत पैसा आ गया है। अगर आप आज्ञा दें तो पहले कालू को गिरफ्तार कर लिया जाए। उसके बाद डिंकी की असलियत सामने आ जाएगी।"

शेर सिंह की आज्ञा से कालू को गिरफ्तार कर लिया गया। थोड़ी सख्ती होने पर उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। इसके बाद डिंकी को पकड़कर दरबार में लाया गया।

"डिंकी, तुम तो हमारे सबसे ईमानदार कर्मचारी थे। तुमने ऐसा क्यों किया?" शेर सिंह ने पूछा।

यह सुन डिंकी हिचकियां भरते हुए बोला, "महराज, एक बार मेरी गलती से कालू के खाते से कुछ रकम दूसरे खाते में चली गई थी। कालू ने मुझे धमकी दी कि अगर मैं उसकी बात नहीं मानूंगा, तो वह मुझे जेल भिजवा देगा। मुझे डरा-धमकाकर वह मुझसे सूचनाएं लेने लगा लेकिन विश्वास कीजिए, मैंने ठगी का एक भी पैसा नहीं लिया है।"

यह सुन शेर सिंह का चेहरा गंभीर हो गया। अपने सबसे ईमानदार कर्मचारी के ठगी में शामिल होने की बात सुन, उन्हें बहुत दुख हुआ था। कुछ देर तक सोचने के बाद वह बोले, "डिंकी, तुमने पैसा लिया हो या नहीं, लेकिन तुम अपराध में शामिल रहे हो, इसलिए तुम्हें सजा जरूर मिलेगी।"

"महाराज, मुझे माफ कर दीजिए। मैं मजबूर था।" डिंकी हाथ जोड़ते हुए गिड़गिड़ाया।

"गलती होने पर उसे स्वीकार करना चाहिए न कि छिपाना। अगर तुम पहले अपनी गलती बताकर माफी मांग लेते तो तुम्हें जरूर माफ कर दिया जाता। किंतु ऐसा न करके तुमने एक अपराधी का साथ दिया, इसलिए तुम भी अपराधी हुए। इसलिए तुम्हें सजा जरूर मिलेगी।" शेर सिंह ने फैसला सुनाया।

यह सुन डिंकी फूट-फूट कर रोने लगा। यह देख टाईगर सिंह ने कहा, "महाराज, मेरी एक विनती है।"

"कैसी विनती?"

"डिंकी ने गलती की है, इसलिए उसे सजा तो मिलनी चाहिए, लेकिन वह एक ईमानदार कर्मचारी रहा है इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए।" टाईगर सिंह ने कहा।

"तुम कहना क्या चाहते हो?" शेर सिंह ने टाईगर सिंह की ओर देखा।

"महाराज, डिंकी को जेल भेजने के बजाय एक साल के लिए सोशल-वर्क करने की सजा दे दी जाए।" टाईगर सिंह ने बताया।

"यह क्या होता है?" शेर सिंह के साथ सारे दरबारी भी चौंक पड़े। उन लोगों ने भी कभी इस सजा का नाम नहीं सुना था।

"हमारे जंगल में ऐसे बहुत से बुजुर्ग जानवर हैं, जो अक्सर बीमार रहते हैं और उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। डिंकी को उनकी सेवा करने की सजा दी जाए। वह एक ईमानदार कर्मचारी रहा है, मुझे विश्वास है कि वह यह काम भी पूरी ईमानदारी से करेगा।" टाईगर सिंह ने सोशल-वर्क की सजा का मतलब समझाया।

"महाराज, सिर्फ एक साल नहीं, बल्कि मैं हमेशा छुट्टियों वाले दिन बुजुर्गों की सेवा किया करूंगा। शायद इससे मेरा प्रयश्चित हो हो सके।" डिंकी फौरन हाथ जोड़ते हुए बोला। उसे अपनी गलती को एहसास हो चुका था और वह अपनी करनी पर बहुत शर्मिंदा था।

यह सजा बिल्कुल नई थी लेकिन सभी दरबारियों को बहुत अच्छी लगी। यह देख शेर सिंह ने कहा, " मैं डिंकी को एक साल के लिए सोशल-वर्क करने की सजा सुनाता हूं।"

टाईगर सिंह ने अपनी बुद्धिमानी से न केवल अपराधियों को पकड़ाया था बल्कि डिंकी को सुधरने का अवसर भी दिलवा दिया था।

महाराज शेर सिंह ने कालू की सम्पत्ति जप्त करवा कर नीलाम करवा दी। उससे मिले रुपयों को उन्होंने ठगी का शिकार हुए लोगों में बंटवा दिया। उन्होंने पिंटू के बेटे चिंपू का ईलाज सरकारी खर्चे पर करवाने की घोषणा भी कर दी। ❀

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : गणित शिक्षक। 1983 से निरंतर लेखन में सक्रिय। यूनिसेफ, एकलव्य व नेशनल बुक ट्रस्ट से पुस्तकें प्रकाशित। राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित। मासिक 'बालसाहित्य की धरती' का संपादन।

पेड़ की ख़ुशी

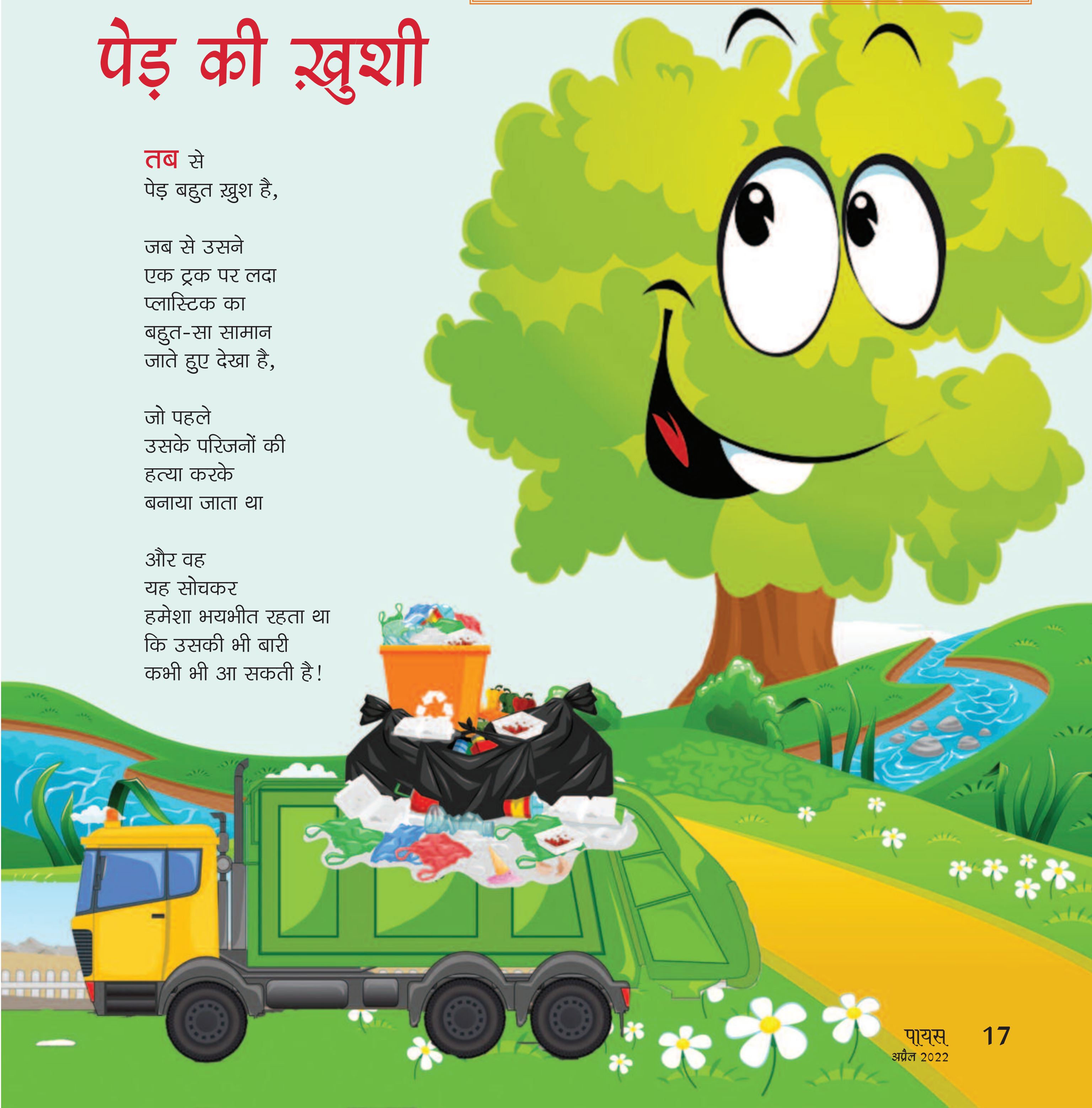

तब से
पेड़ बहुत ख़ुश है,

जब से उसने
एक ट्रक पर लदा
प्लास्टिक का
बहुत-सा सामान
जाते हुए देखा है,

जो पहले
उसके परिजनों की
हत्या करके
बनाया जाता था

और वह
यह सोचकर
हमेशा भयभीत रहता था
कि उसकी भी बारी
कभी भी आ सकती है!

भारतीय विज्ञान जगत के आधार स्तंभ :

डॉ. सी. वी. रमन

डॉ. सी. वी. रमन का जन्म तिरुचिरापल्ली में 7 नवंबर, 1888 को हुआ। उनके पिता चंद्रशेखर अय्यर भौतिक शास्त्र एवं गणित के शिक्षक थे। उन्हें संगीत में भी रुचि थी। उनकी माता का नाम पार्वती अम्माल था। आगे चलकर यही बालक चंद्रशेखर वेंकटरमन अथवा सी.वी. रमन के नाम से विख्यात वैज्ञानिक हुआ।

रमन को बचपन से ही संगीत, संस्कृत और विज्ञान का वातावरण मिला। वह बहुत प्रतिभाशाली छात्र थे। उसकी विलक्षण प्रतिभा की चर्चा चारों ओर होने लगी थी। उन्होंने मात्र 11 वर्ष की आयु में मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी। जब उन्होंने मद्रास के प्रेसिडेंसी कालेज में बीए की कक्षा में प्रवेश लिया, तब प्रोफेसर इलियट ने इस बालक को देखकर सोचा शायद यह बालक भूल से इस कक्षा में आकर बैठ गया है। कौतूहलवश प्रोफेसर ने उस बालक से ही पूछ लिया, "क्या तुम बीए के छात्र हो?"

"हां सर!" बालक ने उत्तर दिया।

इस छोटी सी घटना से वह बालक पूरे कालेज में चर्चा का विषय बन गया। 1905 में केवल वही एक ऐसा छात्र था, जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ और उसे स्वर्ण पदक मिला। विज्ञान के प्रति रुचि, अपने कार्य में लगन, उत्साहपूर्वक नई बातें जानने और सीखने की जिज्ञासा रमन में जन्मजात थी। एकाग्रता और कुशाग्रबुद्धि, दोनों ही उसे प्रकृति की देन थी। इसलिए एम.ए. में प्रमुख विषय के रूप में रमन ने भौतिकशास्त्र को चुना। मद्रास विश्वविद्यालय में वह न केवल प्रथम श्रेणी में पास हुए, बल्कि सर्वाधिक अंक प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त किया। रमन ने इंडियन ऑडिट एंड अकाउंट्स सर्विस (आई.ए. ए.एस.) परीक्षा पास कर के 19 वर्ष की आयु में ही कोलकत्ता के वित्त विभाग में सहायक अकाउंटेंट जनरल के रूप में नौकरी शुरु की।

रमन का विवाह 6 मई 1907 को लोकासुंदरी अम्माल के साथ हुआ। एक दिन रमन ऑफिस से घर लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने 'इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन आफ साइंस' लिखा हुआ देखा और वहां पुराने वैज्ञानिक उपकरणों को देखकर उन्होंने अपना अतिरिक्त समय इस

प्रयोगशाला में शोध कार्य में बिताने की अनुमति ली। 1915 में कोलकाता विश्वविद्यालय के अंतर्गत विज्ञान महाविद्यालय प्रारंभ हुआ जिसमें भौतिक शास्त्र के एक पीठ की स्थापना की गई। रमन ने विज्ञान की सेवा के लिए एक प्राध्यापक के रूप में इस पीठ में नियुक्ति की गई, जिसके लिए उच्च पद की सरकारी नौकरी छोड़ दी।

भारतीय विज्ञान कांग्रेस की शुरुआत 1913 में हुई। रमन यहां भौतिक शास्त्र विभाग के अध्यक्ष बने। बाद में उन्होंने भारतीय विज्ञान कांग्रेस के मंत्री के रूप में कार्य किया। इस प्रकार उनके पास दो-दो प्रयोगशालाओं का दायित्व आ गया।

रमन को पढ़ाने में बहुत आनंद आता था। उनके व्याख्यानों से छात्रों को प्रेरणा मिलती थी, जिससे देश में नए-नए शोध कार्यों के लिए उचित वातावरण तैयार हुआ। पढ़ाते समय कभी-कभी एक घंटे की बजाय उनका भाषण दो-तीन घंटे तक चलता रहता था।

1921 में ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन रहने वाले विश्वविद्यालयों की एक बैठक लंदन में हुई। कोलकाता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में रमन की यह प्रथम विदेश यात्रा थी। वहां की फिजिकल सोसाइटी में रमन के भाषण के सर्वत्र चर्चा हुई। लंदन में सेंट पॉल चर्च की टावर में किसी एक कोने में चल रही बातों की प्रतिध्वनि दूसरे कोने में स्पष्ट रूप से सुनाई देने पर रमन के मन में जिज्ञासा जगी। रमन ने संगीत-वाद्यों वीणा, वायलिन, मृदंग और तबले से उठने वाली ताल ध्वनि तरंगों की विशेषताओं का पता लगाया। इसी प्रकार समुद्र मार्ग से वापस लौटते समय उनके दिमाग में विचार आया कि समुद्र का नीला जल क्या नीले आकाश के प्रत्यावर्तन के कारण ही नीला है? संभव है कि किरणें जब जल कणों के बीच में से जाती हैं तो उनका रंग नीला हो जाता हो?

तभी रमन ने जल कणों में प्रकाश के बिखराव पर एक विस्तृत लेख प्रकाशित किया। विभिन्न देशों के वैज्ञानिकों ने रमन और उनके सहयोगियों के प्रकाश और ध्वनि के रहस्यों पर आधारित शोध पत्रों की बहुत सराहना की, जिसके आधार पर इंग्लैंड की प्रमुख विज्ञान संस्था 'रॉयल सोसाइटी' ने 1924 में रमन को अपना सदस्य बनाया।

आज हम इंद्रधनुष के बारे में बहुत कुछ जानते हैं। इंद्रधनुष में लाल, नारंगी, पीला, हरा, आसमानी, नीला और बैगनी रंग दिखते हैं। सूर्य की सफेद किरणों में ये सभी रंग सम्मिलित होते हैं। और जब सूर्य की किरण किसी कांच के प्रिज्म से होकर गुजरती है तो विभिन्न रंग दिखाई पड़ते हैं। कांच के प्रिज्म में से पार होने वाली प्रकाश-किरणों की विशेषता उन रेखाओं में प्रकट होती है। इस प्रकाश प्रकृति के रहस्य को अनावृत करने का श्रेय रमन को प्राप्त हुआ। 16 मार्च 1928 को रमन ने नई खोज की घोषणा की। रमन का यह नया सिद्धांत 'रमन इफेक्ट' के नाम से विश्वविख्यात हुआ।

1933 में रमन 'टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस' के डायरेक्टर के रूप में बंगलूर में आए।

प्रो. रमन प्रातः जल्दी उठकर घूमने जाया करते थे। प्रभात में ऊंचे-ऊंचे हरे वृक्षों का मनोहारी दृश्य उन्हें बहुत लुभाता था। घूम कर लौटने के बाद प्रातः शोध कार्य में लगे अपने छात्रों के साथ चर्चा में व्यस्त रहते। दस बजे वे डायरेक्टर के कार्यालय में पहुंच जाते थे। ऑफिस का कार्य समाप्त होने के बाद अपनी प्रयोगशाला में लौटते और रात्रि 8:30 बजे तक शोध कार्य में लगे रहते थे। भारत में वैज्ञानिक शोध-कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु प्रो. रमन ने 1934 में 'भारतीय विज्ञान अकादमी' की स्थापना की

डॉ. रमन ने ध्वनि, प्रकाश, चट्टानों, पक्षियों, कीड़ों, तितलियों, रत्नों, समुद्री सीपों, फलों, वातावरण, मौसम दृष्टि एवं श्रवण रचना संबंधी अनेक वैज्ञानिक शोध किए। इस प्रकार उनका अध्ययन विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों तथा भौतिकशास्त्र, भू-गर्भशास्त्र, प्राणीशास्त्र और शरीर विज्ञान तक व्याप्त था।

इनमें ध्वनि और रंगों के प्रति वे सर्वाधिक आकर्षित हुए। उनके पास हीरे, लालमणि और नीलमणि जैसे बहुमूल्य पत्थरों के अतिरिक्त ऐसे रेतीले पत्थर भी थे, जो प्रकाश से पिघल जाते थे।

1929 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित किया। 1930 में एशिया में नोबेल पुरस्कार (भौतिक शास्त्र) प्राप्त करने वाले पहले व्यक्ति बने। भारत सरकार द्वारा उनके अद्वितीय योगदान के लिए 1954 में 'भारत रत्न' दिया गया। 1957 में उन्हें 'लेनिन शांति पुरस्कार' भी मिला। ❀

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

एक कदम आगे रहें

आप सबको नई कक्षा में पहुंचने के लिए बधाई। अब नई कक्षा में फिर से पढ़ाई का दौर चलेगा। फिर सब दोस्तों में होड़ लगेगी कि कौन अपनी मैम से ज्यादा गुड या एक्सीलेंट के साथ शाबासी प्राप्त करता है। इस दौड़ में भी आगे रहना कोई मुश्किल काम नहीं है। जरूरत है, बस लगन से अपने लिए तय काम को सही समय पर करने की।

किताब को पढ़कर जाएं : आपको स्कूल में किताबों से ही पढ़ना पड़ता है। वहां टीचर समझाते हैं और आप उन्हें ध्यान से सुनकर समझते हैं। पर किताब से पाठ को अगर आप पहले ही घर पर एक बार पढ़ लें, तो आप ज्यादा अच्छी तरह टीचर की बात को समझ पाएंगे।

नोट्स बनाते रहें : टीचर जब पढ़ाते हैं, तो खास-खास बातें बताते रहते हैं। उन्हें तुरंत नोटबुक में नोट कर लें। ये नोट्स बाद में किसी भी प्रश्न का बढ़िया उत्तर लिखने में आपकी सहायता करेंगे।

वर्कशीट टाइम पर जमा कराएं : आजकल टीचर पाठ के प्रश्नों पर आधारित वर्कशीट होमवर्क में देते रहते हैं। ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। इन्हें समय पर पूरा करके चेक करवा लें। इन्हें बाद में याद करने के लिए फाइल में लगाएं। साथ-साथ ही याद करते रहें। इससे पेपर के समय आपको बहुत आराम मिलेगा और बाकी दोस्त नंबर के मामले में आपसे पीछे छूट जाएंगे।

रोज स्कूल बैग अपडेट रखें : बहुत बार होता है कि कक्षा में टीचर पढ़ा रहे हैं और आप दूसरे की किताब में देखकर किसी तरह पढ़ रहे हैं, क्योंकि आप किताब लाना भूल गए हैं। ऐसा न होने दें। अपनी किताब हो, तो ध्यान से पढ़ा जाता है और जरूरी नोट्स भी पेंसिल से उस पर लिख पाते हैं। इसलिए स्कूल जाते समय बैग को अपडेट रखने की आदत डालें।

ऐसी छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देकर आप अपने साथियों से आगे निकल सकते हैं।'

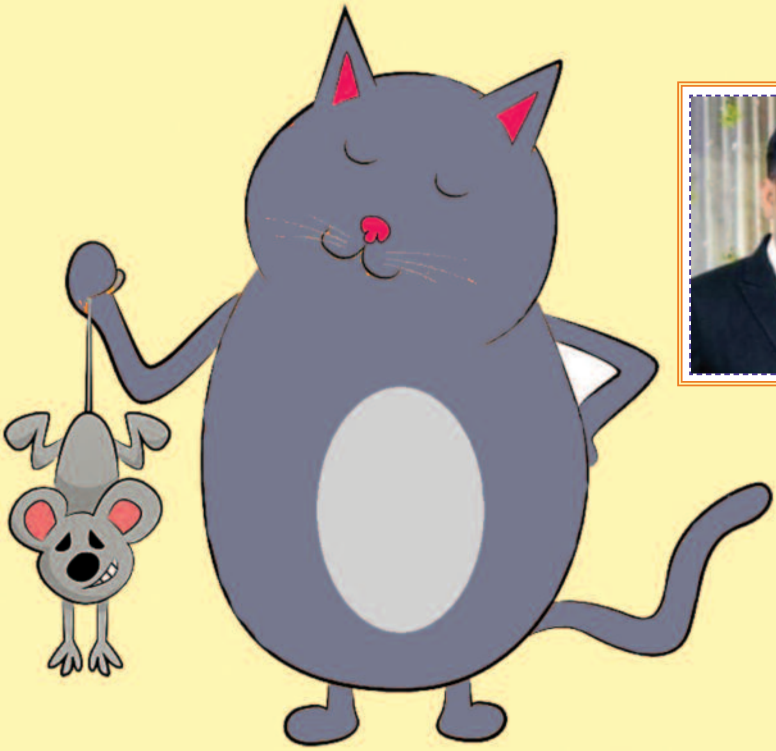

अपने लेखक को जानिए

गौरव वाजपेयी 'स्वप्निल' : बीसीयों पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। साझा संकलनों में कविताएं और कहानियां प्रकाशित। अभी बलरामपुर, (उत्तर प्रदेश) में कर अधिकारी

कैट वर्सेज रैट

कैट पकड़ लाई इक रैट।
बोली, खेलें किरकेट मैच।।

तुमको नहीं सताऊँगी।
केवल खेल खिलाऊँगी।।
तुम जीते दूँगी ट्रॉफी।
हारे तो खा जाऊँगी।।

तब बिल्ली ने थामा बैट।
बॉलिंग पर थे मिस्टर रैट।।
घबराए फेंकी फुलटॉस।
बल्ले के बिल्कुल ही पास।।

जोश में थीं जी! पूसी कैट।
ताबड़तोड़ घुमाया बैट।।
ऊँची गई हवा में बॉल।
ऐसा था कुछ हुआ कमाल।।

चूहे ने ले डाला कैच।
जीत गए वो किरकेट मैच।।

मम्मी की तरकीब

तन्मय की छुट्टियां हो गई थीं। सुबह-सुबह ही उसका दोस्त नमित आ गया। नमित ने कहा, "चलो क्रिकेट खेलते हैं।"

दोनो लॉन में क्रिकेट खेलने लगे। नमित ने गेंद फेंकी, तो गेंद तन्मय के बगल से होती हुई गुलाब की क्यारी में चली गई। तन्मय क्यारी में गेंद लेने गया तो गुलाब के कांटे उसकी बांह में चुभ गए और खून निकलने लगा।

खून देखकर तन्मय अपने दोस्त नमित से बोला, "तुमने ही गेंद क्यारी में फेंकी थी, जिससे मेरे खून निकलने लगा।"

नमित बोला "वैसे अगर यहां गुलाब के पौधे न होते तो कांटा न लगता।"

तन्मय को भी अब सारा दोष गुलाब के पौधे का लग रहा था। उसने कहा, "तुम सही कह रहे हो। पता नहीं, मेरे पापा ने इतने सारे पेड़-पौधे क्यों लगवा दिए हैं। उस दिन मैंने गेंद उछाली, तो पेड़ में फंस गई थी और आज मेरे कांटा चुभ गया।"

खेल खत्म करके तन्मय पापा के पास जाकर बोला, "पापा ये सब पेड़-पौधे कटवा दीजिए। इनकी वजह से मैं क्रिकेट नहीं खेल पाता। अगर ऊपर की तरफ गेंद उछालो, तो पेड़ में फंस जाती है और नीचे फेंको, तो क्यारी में चली जाती है।"

पापा ने कहा "बेटे, लॉन फूलों से

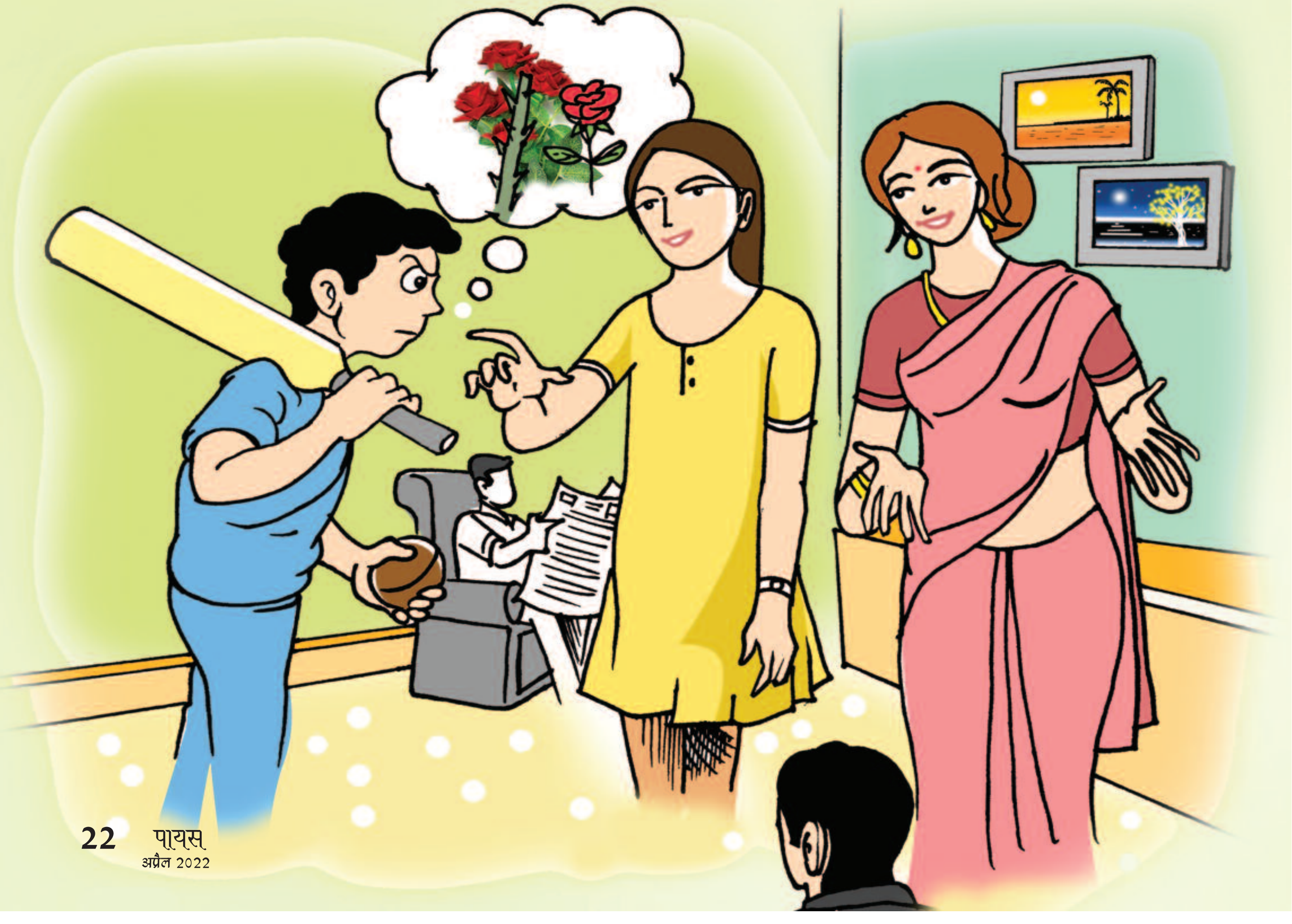

कितना सुंदर लगता है। फूलों से ख़ुशबू आती है और पेड़ों से तुम्हें अमरूद खाने को मिलते हैं।”

तन्मय मुंह बनाकर बोला “ख़ुशबू के लिए तो हम कमरे में परफ्यूम डाल सकते हैं और अमरूद तो बाजार से भी ले सकते हैं।”

पापा ने हंसकर पूछा “क्या तुम्हें पता है कि परफ्यूम भी इन्हीं फूलों से ही बनता है?”

“पापा, जो बनाते हैं, वे फूल लगाएं, आपने क्यों लगाया है? आप आज ही इसे हटा दीजिए।”

तभी उसकी बड़ी बहन तनु आ गई। उसने कहा, “पापा प्लीज, आप गुलाब के पौधे नहीं हटाइएगा।”

“हां-हां, तुम्हें तो अपनी मैम को देने के लिए रोज गुलाब चाहिएं।” तन्मय ने चिढ़ते हुए कहा।

पापा ने कहा, “तनु ठीक कह रही है। हम पेड़-पौधे नहीं हटाएंगे। ”

यह सुनकर तनु ने तन्मय को अंगूठा दिखाकर चिढ़ा दिया। वह मम्मी के पास गया और बोला, “मम्मी, सब लोग तनु दीदी की बात मानते हैं, सब उसी को प्यार करते हैं। मुझे कोई प्यार नहीं करता।”

मम्मी ने तन्मय को प्यार करते हुए पूछा, “क्या हुआ, मेरे तन्मय की बात कोई क्यों नहीं मान रहा है?”

तनु बोली, “मम्मी, यह कह रहा है, लॉन से पौधे हटवा दो क्योंकि यह गेंद नहीं खेल पाता।”

मम्मी ने कहा, “ठीक है, हम आज ही सारे पेड़-पौधे कटवा देंगे।”

तनु ने आश्चर्य से कहा “मम्मी, आप पेड़-पौधे कटवा देंगी, तो हमारा घर बिल्कुल सुंदर नहीं लगेगा।”

मम्मी ने कहा, “ठीक है। हमारा घर सुंदर नहीं लगेगा, तो न लगे। हमारे तन्मय को यही पसंद है।”

तनु को समझ नहीं आ रहा था कि मम्मी को तो लॉन का इतना शौक है। रोज माली से नए-नए पौधे लगवाती हैं। फिर आज क्यों कह रही हैं कि पेड़-पौधे कटवा देंगी। उसने कहा, “मम्मी पौधे तो हमारे लिए कितने जरूरी होते हैं।”

मम्मी ने कहा, “ठीक है, पेड़-पौधे जरूरी होते हैं, पर हमारे तन्मय को गेंद खेलना है, वह भी तो जरूरी है।”

यह सुनकर तन्मय प्रसन्न हो कर नाचने लगा। वह मम्मी के गले लग गया। अब वह तनु को चिढ़ाने लगा।

“मम्मी, अगर सब लोग ऐसे ही पेड़-पौधे काट देंगे, तो हमें खाना कैसे मिलेगा?” तनु ने पूछा।

“तन्मय खाना नहीं खाएगा।” मम्मी ने कहा।

तन्मय बोला, “हां-हां, मैं खाना और फल नहीं, नूडल्स खाऊंगा”।

तनु ने कहा, “बुद्धू, अनाज से ही तो नूडल्स बनता है। जब अनाज नहीं होगा, तो नूडल्स भी नहीं बनेगा।”

तनु ने तन्मय को बताया, “जब पेड़ नहीं होंगे, तो लकड़ी नहीं होगी? फिर क्रिकेट का बैट कैसे बनेगा?

“हम एक पेड़ बचा लेंगे, बैट बनाने के लिए।” तन्मय ने कहा।

“पर अगर सब लोग ऐसे ही पेड़-पौधे कटवा देंगे, तो ऑक्सीजन कैसे बनेगा?” तनु ने कहा।

तनु के बार-बार बाधा लगाने पर तन्मय चिढ़ गया उने तुनककर कहा, “मैंने तो कभी पेड़-पौधों को ऑक्सीजन बनाते नही देखा।”

पापा ने कहा “जब पेड़-पौधों में सूरज की रोशनी से फोटो सिन्थेसिस होती है, तब हवा की कार्बन-डाई-ऑक्साइड ऑक्सीजन में बदलती है। उसी ऑक्सीजन से सांस लेकर हम जीवित रहते हैं।”

“तो क्या हुआ? तन्मय ऑक्सीजन का सिलेंडर लेकर खेलेगा।” मम्मी ने मुस्कराकर कहा।

अब तन्मय बोला, “सिलेंडर लेकर तो मैं दौड़ भी नहीं पाऊंगा।”

पापा, मम्मी को देखकर मुसकराए

अलका प्रमोद

और बोले, “तो क्या हुआ, खड़े-खड़े खेलना।”

‘खड़े-खड़े भी कहीं कोई क्रिकेट खेलता है?’ तन्मय ने सोचा। उसे तो पता ही नहीं था कि पेड़-पौधे कितने काम के होते हैं। उसने धीरे से कहा, “ठीक है, फिर क्रिकेट नहीं खेलेंगे।”

पापा ने कहा “अरे वाह, मेरा बेटा क्रिकेट क्यों नहीं खेलेगा। खेलना तो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी होता है।”

तन्मय ने दुखी होकर कहा, “कैसे खेल सकते हैं। जब खेलो, मेरी गेंद पेड़-पौधों में चली जाती है, मेरे कांटे भी लग जाते हैं।”

“बेटे, पेड़-पौधों की वजह से खून नहीं निकला। तुम गलत जगह खेल रहे थे, इसलिए तुम्हें चोट लगी। गेंद खेलना है, तो पार्क में चलो हम भी खेलेंगे।” पापा ने कहा।

यह सुनकर तन्मय उत्साहित हो गया, “आप भी खेलेंगे? देखिएगा, मैं आपको आउट कर दूंगा।”

तनु ने हंसते हुए पूछा, “पर अभी तो तुम्हें पेड़-पौधे कटवाने हैं न?”

“कभी नहीं, अब तो यह मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमें पता चल गया कि पेड़ की लकड़ी से ही बैट बनता है। अब तो मैं खूब पेड़ लगाऊंगा। ” तन्मय अपनी ही धुन में बोला।

मम्मी की तरकीब खूब काम कर गई थी। पापा, मम्मी और तनु हंसने लगे। ❁

भीमा

बालक भीमा का नए स्कूल में पहला दिन था। मास्टर जी पढ़ा ही रहे थे, तभी आधी छुट्टी (रिसेस) की घंटी बजी। बच्चे क्लास में ऐसे खुश होकर धमाचौकड़ी मचाने लगे, जैसे जेल से छूटे हों।

बच्चों के पेट में चूहे दौड़ रहे थे, इसलिए जल्दी से सब बच्चों ने अपने बैग में से खाना निकालकर, अपने दोस्तों के साथ बैठकर खाना शुरू कर दिया। भीमा ने भी अपना खाना निकाला और चार-पांच बच्चों के समूह के पास बैठने लगा। बच्चे दूर से ही चिल्लाए ,

"अरे! हमारे पास नहीं बैठना है।"

एक बच्चा बोला, "तू तो अछूत है। हमारे साथ नहीं बैठ सकता।"

एक और बच्चा बोला, "तेरी इतनी हिम्मत कि हमारे साथ बैठकर खाने की बात सोच रहा है?"

'इतना अपमान और तिरस्कार आखिर उसका क्या कसूर है? भीमा सोचने लगा। उसकी खाने की इच्छा समाप्त हो गई थी। दिमाग में बार-बार गूंज रहा था, "तू तो अछूत है। हमारे साथ बैठकर नहीं खा सकता।"

यही सब सोचते-सोचते रिसेस का समय समाप्त हो गया और घंटी की आवाज सुनाई दी। भीमा ने खाना तो खाया नहीं था, पर गरमी गजब की थी। प्यास के कारण उसका बुरा हाल था। उसने भी अन्य बच्चों की तरह घड़े से पानी पीने के लिए हाथ बढ़ाया ही था कि पास बैठा कर्मचारी जोर से चिल्लाया, "अरे क्या कर रहा है? घड़ा छूने जा रहा है। चल दूर खड़ा हो, मैं पानी पिला दूंगा।"

"एक बार फिर से इतना अपमान। अपने आप पानी पीने का भी अधिकार नहीं है।" उसकी आंखें लाल हो गई थीं। पर पानी पिए बिना काम नहीं चल सकता था। इसलिए पानी के साथ अपमान का घूंट भी पीकर रह गया भीमा। आखिर करे तो क्या करे? स्कूल आए बिना तो पढ़ाई असंभव थी। उसका आत्म-सम्मान लहूलुहान हो गया था।

दूसरे दिन स्कूल पहुंचा, तो उसका मन नहीं लग रहा था पढ़ाई में। वैसे भी उसे पूरी क्लास से अलग बैठना होता था क्योंकि कक्षा का कोई भी बच्चा उसके साथ नहीं बैठना चाहता था। क्लास मेंपढाई चल रही थी। मास्टर जी एक-एक बच्चे को बुलाकर हिंदी के पाठ का वाचन करवा रहे थे। एक बच्चा अटक-अटक कर पढ़ने लगा, दूसरे ने कुछ ठीक से पढ़ा। अब मास्टर जी ने भीमा को बुलाया तो क्लास में खुसुर-पुसुर होने लगी। कुछ बच्चे बोले,"ये क्या पढ़ेगा?"

"इसे पढ़ना आता भी है?" एक और आवाज आई।

"शांत हो जाओ, हां भीमा, पढ़ो।"

मास्टरजी ने बच्चों को डांटा।

पर बच्चे कहां मानने वाले थे? फुसफुसाने की आवाजें अब भी आ रही थीं और इस कारण भीमा को पढ़ने में कठिनाई हो रही थी।

"यह कैसी कक्षा है? अनुशासन का नाम भी नहीं है।" अबकी बार मास्टर जी गुस्से में और अधिक जोर से डांटकर बोले। क्लास में शांति छा गई। भीमा पढ़ने लगा। एक-एक शब्द का स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण था। मास्टर जी प्रसन्न हो गए। "कितना अच्छा वाचन करता है, देखा तुम लोगों ने। जाओ भीमा तुम बैठो।" मास्टर जी ने शाबाशी के भाव से कहा।

रिसेस की घंटी लग गई थी, पर कल की बात भीमा के दिमाग में आज भी गूंज रही थी। उसने कपड़े

में बंधा अपना खाना निकाल तो लिया पर खाना शुरू नहीं कर पाया। मास्टरजी ने उसे इस तरह चुपचाप बैठे देखा तो बोले, "बेटा तुम खाना क्यों नहीं खा रहे हो?"

"मैं इन सब के साथ नहीं खा सकता मास्टर जी। मैं अछूत हूं ना।" उदास भीमा ने कहा।

"तुम मेरे साथ खाओगे। चलो, हम उधर बैठकर खाते हैं।" मास्टर जी ने पानी का लोटा भी लिया और खाना खाने बैठ गए। मास्टर जी ने अपना टिफिन खोलकर खाना शुरु कर दिया, पर भीमा संकोचवश वैसे ही बैठा था।

"तुम भी खाओ ना बेटा। शुरू करो खाना।" मास्टर जी ने प्यार से अपने हाथ से भीमा को खिलाते हुए कहा। इससे भीमा की हिचकिचाहट भी दूर हो गई और मास्टर जी के प्यार ने कल के अपमान पर मरहम का काम किया। दोनों ने साथ में खाना खाया। फिर भीमा को मास्टरजी ने पानी पिलाया और स्वयं भी पिया। उन्हें भीमा में एक मेधावी छात्र दिखाई दे रहा था, जिसका उसकी कक्षा के नासमझ बच्चे 'अछूत' कहकर अपमान कर रहे थे।

एक प्रतिभावान बालक कहीं ऐसे ही गुम न हो जाए, इसलिए उन्होंने कहा, "याद रखना, तुम्हें छोटी-छोटी बाधाओं से ऐसे घबराना नहीं है। तुम्हें खूब पढ़ना है। जितनी अच्छी तरह पढ़ोगे, उतना आगे बढ़ोगे।" मास्टर जी ने आशीर्वाद देने के लिए भीमा के सिर पर हाथ रखते हुए कहा, "भीमा तुम खूब आगे बढ़ोगे। आज से तुम अपने नाम भीमराव के आगे मेरा सरनेम अम्बेडकर लगाओगे।"

और मास्टरजी के ये शब्द भीमा के मन पर अंकित हो गए। भीमा पढ़ता गया, आगे बढ़ता गया। देश ही नहीं, विदेश में भी अर्थशास्त्र और विधि की उच्च शिक्षा प्रप्त की उसने।

बच्चो, यह थी, भारत के संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर के बचपन की कहानी, जिनका जन्मदिन 14 अप्रैल को है। ❁

रचनाकार को जानिए

डॉ अलका अग्रवाल : सेवानिवृत्त प्राचार्या, बाल कविता, कहानी की कई पुस्तकें प्रकाशित। 1 बाल उपन्यास, शोध की 2 पुस्तकें, 2 कविता संग्रह और 1 कहानी संग्रह प्रकाशित। अनेक सम्मान और पुरस्कार प्राप्त।

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

चटर-पटर

अपने लेखक को जानिए

श्रवण कुमार सेठ : बाल कविताएं, कहानियां, लघुकथाएं इत्यादि विधाओं में लेखन। हाल में बाल कविताओं की पहली पुस्तक 'आसमान में उड़ना है' प्रकाशित हुई। सम्प्रति : समीक्षा अधिकारी, उत्तर प्रदेश

चूहे को बादाम मिले थे,
चुहिया को अखरोट।
दादा जी के कोट रखे थे,
नये कड़कते नोट।।

चूहे ने बादाम खा लिए,
चुहिया ने अखरोट।
पहुँच गये बाजार साथ में,
लेकर दोनों नोट।।

चना खरीद लिए दोनों ने,
आधा किलो मटर।
दिन हो चाहे रात बैठकर,
खाएँ चटर-पटर

माटी पुत्र

महेंद्र देवांगन 'माटी'

जाग सबेरे चिड़ियाँ चहके,
कोयल गाना गाये ।
कमल ताल में खिले हुए हैं,
सबके मन को भाये ।।
रंभाती हैं गैया देखो,
बछड़ा भी रंभाये ।
दाना पानी लेकर अब तो,
मोहन भैया आये ।।
उठ जाओ अब सोकर प्यारे,
मुर्गा बाँग लगाये ।
आलस छोड़ो बिस्तर त्यागो,
सबको आज जगाये ।।
माटी पुत्र चले खेतों में,
हल को भी ले जाये ।
इस माटी का कण-कण पावन,
माथे तिलक लगाये ।।

पानी की घंटी

"मम्मी, आज मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है । अबीर बोला ।

अबीर लगातार दो-तीन दिन से यही शिकायत कर रहा था, लेकिन अंजना को लगता था कि वह स्कूल न जाने के बहाने बना रहा है। स्कूल से आते ही पेट-दर्द की बात सुनकर अंजना घबरा गईं और जल्दी से उसके कपड़े बदलकर उसे डॉक्टर के पास ले गईं।

डॉक्टर शीना ने अबीर की जांच की और बोलीं, 'बेटा, तुम दिन में कितने गिलास पानी पीते हो ?"

यह सुनकर अबीर कुछ सोचते हुए बोला, "पता नहीं। मैंने कभी गिना नहीं।"

इस बात पर डॉक्टर शीना और अंजना, दोनों ही मुसकराने लगीं। डॉक्टर शीना बोलीं, "फिर भी अंदाजा तो लगा ही सकते हो। अब तुम आठवीं कक्षा में पढ़ते हो और एक बड़े बच्चे हो।"

अबीर बोला, "मैडम, मैं पानी बहुत कम पीता हूं। कभी-कभी तो शायद पूरे दिन में एक गिलास ही।"

यह सुनकर डॉक्टर शीना दंग रह गईं। वह समझ गईं कि पेटदर्द अबीर को पानी कम पीने के कारण ही हुआ है।

वह अंजना से बोलीं, "अंजना आजकल बच्चे पानी कम पीते हैं, जिससे शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है। इससे डिहाइड्रेशन की समस्या हो जाती है । शरीर में पानी कम होने से पेट खराब, अपाचन और पेटदर्द की समस्या हो जाती है। अगर अबीर दिन में आठ गिलास पानी पिएगा, तो सब ठीक हो जाएगा।"

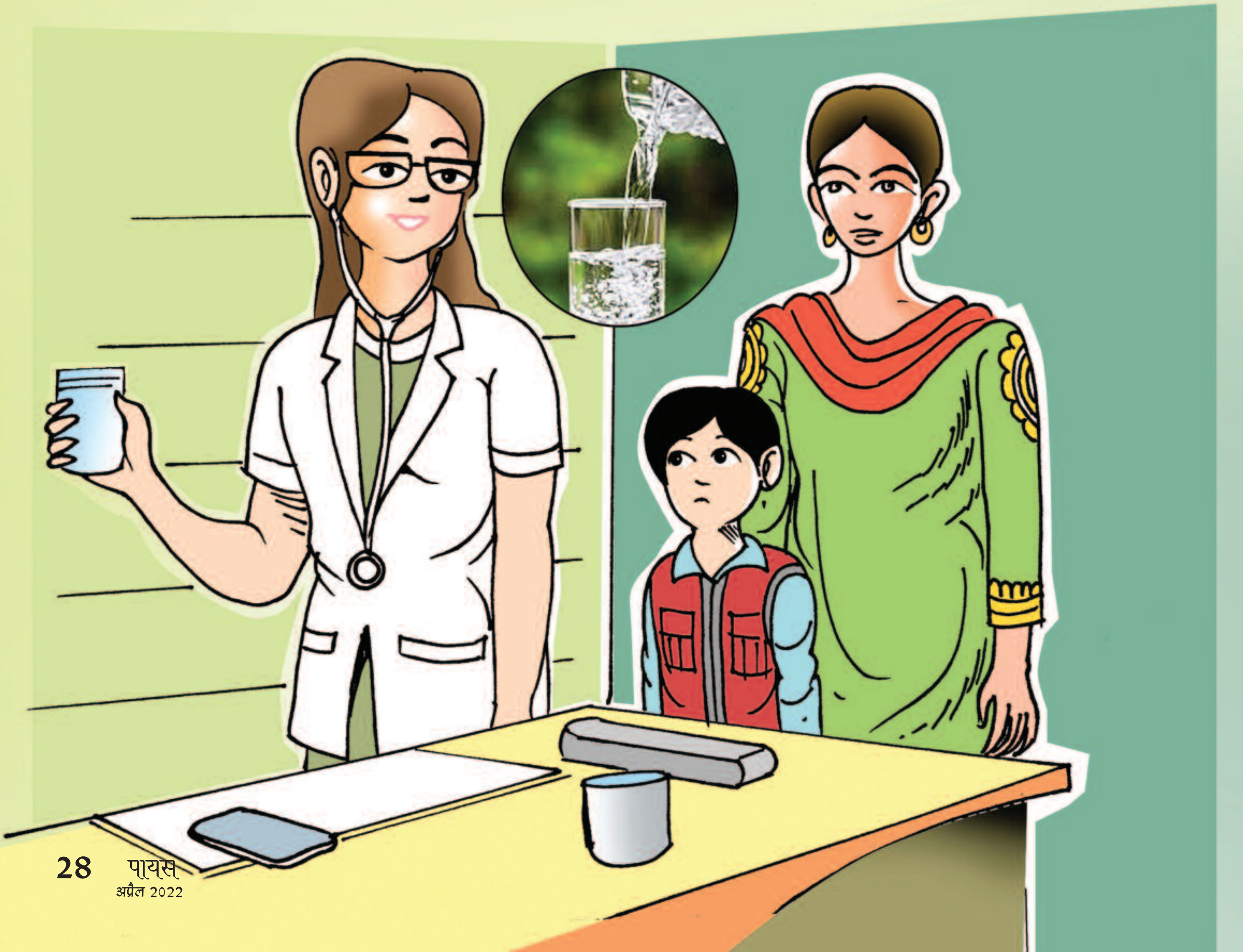

"पर डॉक्टर यह कैसे संभव है? आधा दिन तो अबीर का स्कूल में ही जाता है। वहां तो यह बिल्कुल पानी नहीं पीता।"

"घबराओ नहीं! इसका हल भी है मेरे पास। कल मैं अबीर के स्कूल में जाऊंगी। मेरी बेटी अणिमा भी तो वहीं पर पढ़ती है।"

"वह तो ठीक है, पर तुम स्कूल में बच्चों में पानी न पीने की समस्या कैसे दूर करोगी?"

"वह तुम्हें जल्द ही पता चल जाएगा। अभी तुम अबीर को लेकर जाओ और इसे अच्छे से पानी पिलाओ व पौष्टिक भोजन कराओ।"

अगले दिन डॉक्टर शीना, अबीर के स्कूल पहुंचीं। स्कूल की प्रिंसिपल मिसेज टीना खोसला डॉक्टर शीना को जानती थीं और समय-समय पर बच्चों की जांच के लिए उनसे जानकारी लेती थीं।

डॉक्टर शीना को देखकर मिसेज टीना बोलीं, "आओ डॉक्टर शीना! आज कैसे आना हुआ? लगता है आज बच्चों के लिए किसी विशेष मुहिम के बारे में बात करने आई हो, क्योंकि अभी तो मैंने तुमसे बच्चों के स्वास्थ्य की जांच के बारे में कोई बात नहीं की।"

"जी बिल्कुल सही समझीं मैडम। मैं आपसे एक बहुत जरूरी बात करने आई हूं। कल इसी स्कूल का आठवीं कक्षा का अबीर मेरे पास आया था। उसको बहुत तेज पेट दर्द था। जांच करने पर पता चला कि उसके शरीर में पानी की कमी थी।"

यह सुनकर मिसेज टीना हैरानी से बोलीं, "अरे, अभी तो ठंडा ठीक है। ऐसे में शरीर में पानी की कमी।"

"जी मैडम! बेशक मौसम ठीक है, लेकिन शरीर को तो पानी चाहिए ही होता है न। यह इसलिए हुआ क्योंकि अबीर दिन में कई बार केवल एक गिलास पानी पीता है, जबकि शरीर को पूरे दिन में लगभग दो से तीन लीटर पानी की आवश्यकता होती है। हमारे शरीर में लगभग 70 प्रतिशत से अधिक पानी है। जैसे ही हमारे शरीर से पानी की मात्रा कम होने लगती है, वैसे ही हमारा शरीर शिथिल और कमजोर पड़ जाता है। इसलिए सभी को दिन में प्रतिदिन आठ गिलास पानी पीना चाहिए।"

यह सुनकर प्रिंसिपल टीना खोसला बोलीं, "ओके। मैं क्लास टीचर को कहूंगी कि वह अपनी-अपनी कक्षा को इस बारे में बताएं और उन्हें कहें कि वे पानी पिएं।"

"सिर्फ इतने से ही काम नहीं चलेगा, बल्कि आपको इसके लिए वह कदम उठाना होगा जो केरल, कर्नाटक, ओडिसा के बाद अब महाराष्ट्र के स्कूलों में उठाया जा रहा है। आपको स्कूल में तीन बार वॉटर बेल बजवानी होगी, जिस दौरान बच्चों के लिए पानी पीना अनिवार्य होगा। घंटी बजने से वे सचेत रहेंगे और उत्सुकतावश पानी पिएंगे। घंटी चाहे अवकाश की हो, या पीरियड खत्म होने की, या फिर लंच की, बच्चों को अच्छी लगती हैं। ऐसा करने से बच्चे पानी पिएंगे और उनके अंदर पानी की कमी नहीं होगी। बच्चे अपना अधिकतर समय स्कूल में ही बिताते हैं, इसलिए उनका स्कूल में पानी पीना जरूरी है।"

यह सुनकर टीना खोसला बोलीं, "वाह डॉक्टर शीना। यह तो तुमने बहुत अच्छी बात बताई। मैं स्कूल प्रबंधन को इस बारे में जानकारी दे देती हूं और अगले सप्ताह से ही हमारे स्कूल में भी लंच व छुट्टी की घंटी की तरह पानी की घंटी भी बजनी शुरू हो जाएगी।

"जी मैडम, यह बहुत जरूरी है क्योंकि बच्चे अपनी दुनिया में खोए रहते हैं। ऐसे में पढ़ाई व खेल के समय वे अक्सर पानी और खानपान पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते, जिससे छोटी उम्र में ही उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पानी की घंटी लगने से बच्चों को पानी पीने की आदत हो जाएगी और फिर वे नियमपूर्वक पानी पिएंगे। इसके बाद उन्हें पानी कम पीने से होने वाली समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।"

"बिल्कुल डॉक्टर शीना। स्कूल का कर्त्तव्य केवल बच्चों को अच्छी शिक्षा देना ही नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी है। स्कूल भी बच्चों का घर ही होता है, इसलिए उन्हें यहां पर भी हर तरह की सुविधा मिलनी चाहिए ताकि पाठशाला के इस प्रांगण में वे शिक्षा से प्रेम करें और शिक्षा ग्रहण कर देश के अच्छे व स्वस्थ नागरिक बनें।"

"जी मैडम। आपने बिल्कुल ठीक कहा। अब मैं चलती हूं।" यह कहकर डॉक्टर शीना बाहर निकल गईं।

डॉक्टर शीना के बाहर जाते ही प्रिंसिपल पानी की घंटी लगाने की तैयारी में जुट गईं। ❀

अपने लेखक को जानिए

रेनू सैनी : विगत 20 वर्षों से देश के विभिन्न समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में लगभग पांच हजार से अधिक लेख, कहानियां आदि प्रकाशित। अभी तक 25 पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी एवं मराठी में अनुवाद। भारतीय हरिशचन्द्र पुरस्कार के साथ ही अनेक पुरस्कार से सम्मानित।

वह लंबे बालों वाला

अकुज

अल्बर्ट आइंसटीन एक बहुत अच्छे वैज्ञानिक थे। कई बार जब वह काम से कुछ ऊब जाते, तो घूमने निकल पड़ते।

उनके एक मित्र थे चक रॉथमैन। उनसे आइंसटीन की खूब पटती थी। रॉथमैन का घर न्यूयार्क के पूर्वी आइसलैंड पर था। वहां उसके पिता की बहुत बड़ी दुकान थी।

1939 की गरमियों की बात है। आइंसटीन ने सोचा, इस बार छुट्टियां ऐसी जगह मनानी चाहिए, जहां कोई ज्यादा परेशान न कर सके। उन्हें अपने मित्र रॉथमैन के टापू की याद आई। पर उन दिनों रॉथमैन काम के सिलसिले में कहीं बाहर गया हुआ था। पर आइंसटीन को इससे क्या। उन्होंने फटाफट पैसोनिक के पूर्वी द्वीप पर एक कॉटेज बुक कराया और चल पड़े, छुट्टियां मनाने।

अगले दिन आइंसटीन अपने मित्र की दुकान पर पहुंचे। दुकान पर चक रॉथमैन के दादाजी डेविड रॉथमैन थे। रॉथमैन के घर में आइंसटीन की चर्चा होती रहती थी। अतः सब उन्हें जानते ही थे। जैसे ही आइंसटीन दुकान में घुसे, चक रॉथमैन के दादाजी ने आइंसटीन को पहचान लिया। पर जान-बूझकर उन्हें बताया नहीं। उनसे वह वैसे ही पेश आए जैसे अन्य ग्राहकों से आते थे।

"आइए-आइए, कहिए क्या सेवा करूं।" डेविड ने हंसते हुए कहा।

चूकि आइंसटीन जर्मनी में रहे थे, अतः उनकी अंग्रेजी पर जर्मन उच्चारण हावी था। उन्हें सैंडिल की जरुरत थी। उन्होंने अपनी जरूरत बताई, "मुझे संदियल चाहिए।" उन्होंने सैंडिल को जर्मन उच्चारण में संदियल कहा। अंग्रजी में संदियल का अर्थ होता है सौरघड़ी।

डेविड समझ गए कि आइंसटीन को वास्तव में क्या चाहिए। पर वह बड़े हंसमुख थे अतः मुसकराते हुए बोले, "वैसे हमारी दुकान पर सब कुछ उपलब्ध है, परंतु आपके मतलब की चीज हमारे घर के पिछवारे रखी हुई है। आपको वहां तक जाना होगा।"

आइंसटीन सोच में पड़ गए। सैंडिल इतनी बड़ी चीज तो नहीं कि दुकान में न रखी जा सके। पर उत्सुकतावश वह डेविड के साथ पिछवारे की ओर चल पड़े।

डेविड रॉथमैन को कला का शौक था। वह पुरानी चीजें भी बड़े शौक से खरीदा करते थे। कहीं से वह एक सौर घड़ी भी खरीदकर लाए थे। वह उनके घर के पीछे लगा हुआ था। वहां पर पहुंचकर वह आइंसटीन से बोले, "यह रहा आपके मतलब की चीज।"

सैंडिस (चप्पल) के बदले सौर घड़ी देखकर पहले तो आइंसटीन अचकचाए, फिर उच्चारण के कारण हुए इस गफलत पर वह खूब हंसे। हंसी में डेविड में भी उनका साथ दिया। फिर आइंसटीन ने पैरों की ओर इशारा करके अपनी जरूरत बताई। तब जाकर उन्हें सैंडिल मिले। डेविड ने हंसकर कहा, "दादा की दुकान पर अजनबी बनकर आओगे, तो ऐसा ही होगा। मेरा पोता तो यहां नहीं है, पर उसका दोस्त भी मेरा पोता ही हुआ। अतः तुम मेरे घर के सदस्य जैसे हो।"

आइंसटीन झेंप गए। फिर तो दादा और पोते के उम्र के दो लोगों में ऐसी दोस्ती हुई कि लगता था जैसे वे एक दूसरे को वर्षों से जानते हों।

एक दिन आइंसटीन डेविड के साथ दुकान पर बैठे थे। वहां रेकार्ड प्लेयर पर गाना बज रहा था। उसमें वॉयलिन की बड़ी अच्छी धुन थी। आइंसटीन तन्मयता से उसे सुन रहे थे।

"जानते हो अल्बर्ट, मैं भी वॉयलिन बहुत अच्छा बजाता हूं।" डेविड अपनी घनी मूंछों पर ताव देते हुए बोले।

"सच!" आइंसटीन बच्चों की तरह उछलकर बोले, "मुझे भी वॉयलिन बहुत पसंद है। चलिए, हम लोग कभी वायलिन पर बातें करेंगे।"

उसी रात डेविड आइंसटीन के कॉटेज पर पहुंच गए। उनके पास वॉयलिन के एक से बढ़कर एक रिकॉर्ड थे। आइंसटीन ने एक रिकॉर्ड को छांटा और उसके धुन को बजाने को कहा।

धुन बड़ी शानदार थी। डेविड उसके साथ वॉयलिन बजाने लगे। पर वह गाने के साथ-साथ वॉयलिन नहीं बजा पा रहे थे। थोड़ी देर तक आइंसटीन उनकी परेशानी का मजा लेते रहे। फिर बोले, "लाइए, मैं प्रयास करता हूं।"

डेविड मुसकराए। उन्हें मालूम था आइंसटीन अपने प्रयोगों में बहुत व्यस्त रहते हैं, मन बहलाने के लिए और सारे काम करते हैं, उन्हीं में से एक काम वॉयलिन बजाना था। उन्होंने हंसते हुए वॉयलिन आइंसटीन को पकड़ा दिया।

आइंसटीन ने वॉयलिन बजाना आरंभ किया। जैसे-जैसे वॉयलिन की स्वर लहरियां वातावरण में फैल रही थी, उससे ज्यादा तेजी से अविश्वास के भाव डेविड के चेहरे पर फैल रहे थे। आइंसटीन इतना बढ़ियां वॉयलिन बजा रहे थे कि डेविड ने चुपचाप रिकार्ड को बंद कर दिया और आइंसटीन के इस नए रूप को देखने और सुनने लगे। धुन समाप्त हुई, तो आइंसटीन ने फिर वॉयलिन पर चर्चा छेड़ दी। पर डेविड ने हंसकर कहा, "मेरे खयाल से हमें किसी ऐसे विषय पर बातें करनी चाहिए जिसपर मैं भी कुछ बोल सकूं।"

आइंसटीन उनका मतलब समझ गए। फिर बातचीत विज्ञान और दर्शन पर होने लगी। डेविड अपने जमाने के कम पढ़े-लिखे थे, परंतु उन्हें भी विज्ञान और दर्शन में रुचि थी। फिर तो दो अलग-अलग उम्र के लोगों में चर्चा ऐसी छिड़ी कि रात हो गई। डेविड जब घर जाने लगे, तो आइंसटीन उन्हें छोड़ने घर के बाहर आए। पर बातचीत खत्म ही नहीं हो रही थी। आखिरकार आइंसटीन के नौकर को उनकी बातचीत में हस्तक्षेप करना पड़ा।

एक दिन आइंसटीन ने डेविड से कहा, "दादाजी, मैं आपको अपना रिलेटिविटी का सिद्धांत समझाऊं।"

"हां-हां, क्यों नहीं!" डेविड खुश होकर बोले, " पर मेरी एक शर्त है। मैं ठहरा कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति। तुम मुझे यह सिद्धांत समझाने में गणित का प्रयोग नहीं करोगे।"

आइंसटीन मान गए। जब वह सिद्धांत समझाने लगे तो एक पेज पर कुछ अंक लिखने लगे।

"न-न, गणित नहीं, तुम शर्त भूल रहे हो।" डेविड ने टोका।

"अरे, यह तो मैं अपने लिए लिख रहा हूं। आपको समझाने में इसका प्रयोग नहीं करूंगा।" आइंसटीन बोले। पर उन्हें बिना गणित का

प्रयोग किए सिद्धांत समझाने में बहुत परेशानी हुई। किसी तरह समझा तो दिया पर उस दिन आइंसटीन ने अनुभव किया कि आम लोगों को उनकी भाषा में ही इस सिद्धांत को समझाने की आवश्यकता है। फिर उन्होंने अपने सिद्धांत को आम लोगों को समझाने के लिए नए तरीके अपनाए, जिसमें उन्हें खूब सफलता मिली।

आइंसटीन को कई बार जर्मनी की खूब याद आती थी। एक बार डेविड ने उनसे पूछ ही लिया– "आखिर तुमने जर्मनी को क्यों छोड़ा?"

"अरे क्या बताऊं।" आइंसटीन हंसते हुए बोले, "जर्मनी में हालात लगातार खराब होते जा रहे थे। वहां हर एक को शक की निगाह से देखा जाता था। एक रात मेरे घर में सैनिकों की एक टुकड़ी घुस आई। उनका कमांडर बोला, 'हमें खबर मिली है कि आपके घर में हथियार है।'

मैं हंसकर बोला, 'अगर आपके पास ऐसी सूचना है, तो जरूर तलाशी लीजिए।'

उन्होंने तलाशी ली। फिर रसोईघर के दो चाकू लाकर बोले, 'हमारी सूचना सही थी। यह देखिए आपकी रसोईघर से दो चाकू बरामद हुए हैं। हम इन्हें ले जा रहे हैं। भविष्य में आप सावधान रहें।'

मैं समझ गया। मैंने अपनी पत्नी से कहा, "इस घर को ध्यान से देख लो, क्योंकि आज के बाद तुम इसे कभी नहीं देख पाओगी।"

उसी रात जरूरी सामान लेकर मैं अपनी पत्नी के साथ जर्मनी से भाग निकला।"

"आपको मालूम है दादाजी, यदि मैं वहीं रह जाता तो क्या पता वह मुझे मार ही डालते।" कहते हुए आइंसटीन सिहर उठे।

छुट्टियों के बाद आइंसटीन अपने घर लौट गए। पर डेविड से उनका पत्राचार बना रहा। वह भी आइंसटीन को बहुत चाहते थे।

एक बार उन्हें आइंसटीन ने खबर भिजवाई की वह अपनी नाव पर उनसे मिलने आ रहे हैं। सुनकर डेविड घबरा गए। उन्हें मालूम था कि आइंसटीन को नाव में घूमने का बड़ा शौक है, परंतु इस बार दूरी बहुत ज्यादा थी, जबकि आइंसटीन की नाव बहुत छोटी थी। खैर वह उनका इंतजार करने लगे। पर दोपहर हो गई। आइंसटीन का कुछ अता-पता नहीं था। अब डेविड घबराए। उन्हें लगा कि ऐसा न हो कि आइंसटीन के साथ समुद्र में कोई दुर्घटना घट गई हो। उनके चिंतित होने का कारण यह भी था कि समुद्र में घूमने के शौकीन आइंसटीन को तैरना नहीं आता था। जब घबराकर वह पुलिस को फोन कने लगे, तो तब तक पुलिस का ही फोन आ गया।

डेविड आशंका से सिहर उठे। वह दिल थामकर खबर सुनने लगे। उधर से एक पुलिसवाला बोल रहा था, "सर यहां के समुद्र तट पर लंबे-लंबे बालों वाला एक व्यक्ति घूम रहा है। वह आपके घर का पता भूल गया है। आपसे मिलना चाहता है। आप यहां आएंगे या उन्हें आपके पास भेज दूं?"

तट पर घूमते व्यक्ति का हुलिया सुनते ही डेविड समझ गए कि वह और कोई नहीं दुनिया के महानतम वैज्ञानिकों में से एक आइंसटीन ही है। इतने बड़े वैज्ञानिक की सादगी पर वह मन ही मन रीझ गए। अपनी बात रखने वाले इस अनोखे पोता समान मित्र से मिलने डेविड तट की ओर दौड़ पड़े। ❁

रेस का राज

पंकज राय

बिल्लो, चलो, हम दोनों रेस लगाते हैं
मेरे तीन गिनते ही तुम रेस शुरु कर देना। एक... दो... तीन...
हुर्रे देखो, मैं तुमसे कितना तेज दौड़ता हूं। तुम पीछे ही रह जाओगे
शुक्र है, मुर्ख बिल्ला दूर चला गया। अब मैं चैन से आईसक्रीम खा सकता हूं

गौरी की नूरी

धनराज को चिंता थी कि बच्चों की सेहत बने कैसे? उन्हें अपने पोते सारंगी के स्वास्थ्य की चिंता खाये जा रही थी। एक दिन उनके दोस्त पुखराज ने सुझाव दिया, "धनराज तू एक गाय खरीद ले।"

सुनकर सारंगी ने खुश होकर कहा, "बाबा उसका नाम रखेंगे गौरी। लेकिन वह रहेगी कहां।"

"तेरे कमरे में रहेगी। तेरे लिए ही तो गाय खरीद रहा हूं, जिससे उसका दूध पीकर हट्टा कट्टा हो जाए।" बाबा धनराज मजाक करते हुए ठी–ठी हंस पड़े।

"न-न मेरे कमरे में हरगिज नहीं रहेगी। उफ, गोबर से एकदम बदबू फैला देगी।" उसने नाक बंद करते कहा।

"अरे क्यों खिजा रहा है छोटे से बच्चे को धनराज। बेटा चिंता न कर। उसका घर हम अहाते के एक कोने में बनवा देंगे।" पुखराज बोले।

अगले दिन अहाते में छप्पर डालकर गाय का छोटा सा हवादार घर बन गया। दोनों मित्र एक गाय खरीदकर ले आए। अब तो पौ फटते ही पुखराज सारंगी के घर आन धमकते। वे और उसके बाबा गाय को, चारा खिलाते, दूध दोहते।

सारंगी स्कूल से आकर गौरी गाय से मिलने जाता, पर दूर-दूर ही रहता और उसकी गतिविधियां बड़े गौर से देखता। गौरी उसे बड़ी अजीब लगती। वह उसे प्यार भरी निगाहों से देखती, चाहती कि सारंगी उसके पास आए, उससे दोस्ती करे। पर वह एक कोने में खड़ा उसे टुकुर-टुकुर देखता रहता।

एक दिन सारंगी ने अपनी चुप्पी तोड़ी। बोला, "गौरी, तुम हो तो बहुत सुंदर, आंखें तो चमकती ही रहती हैं। पर खाती कैसे हो? सब गपागप मुंह में भरकर सटक लेती हो। चबाती भी नहीं हो ठीक से।"

गाय हंस दी, "पर बिना कारण जाने तुमने मुझे न जाने क्या क्या कह दिया। पहले गायें घरों में नहीं जंगलों में रहती थीं। वहां शेर चीता

चित्र : नीतू ख़ोहवाल

हमारे हजार दुश्मन! उनके डर के मारे घास-पत्ते जल्दी जल्दी मुंह में ठूंस कर हम भाग जाते। बस, वह हमारी आदत बन गई है।"

"लेकिन जल्दी जल्दी सटकने से तो पेट में दर्द हो जाता है।"

"हमारे पेट में दर्द नहीं होता, मेरे चार पेट हैं। चार पेटों में बारी-बारी से चारा जाकर हजम होता है। मैं पहले तो अपना भोजन जल्दी-जल्दी निगल लेती हूं। फिर उसे दुबारा मुंह में ले आती हूं। फिर आराम से उसे धीरे-धीरे चबाती हूं। एक तरह से जुगाली करती हूं।"

"न जाने तुम कैसे चबाती हो? चप-चप की आवाज होती रहती है। मुझे यह एकदम अच्छा नहीं लगता। खाते समय कोई आवाज करता है क्या? मुंह बंद करके खाना चाहिए।"

"मैं मुंह बंद करके नहीं खा सकती। मेरे केवल नीचे के जबड़े में दांत हैं, ऊपर नहीं। चारे को मुंह में घुमाते हुए चबाना पड़ता है।"

"देखो गौरी, लार टपकाना अच्छा नहीं लगता"

"ओह सारंगी, रूठो मत। मेरे चारे में नमक मिला रहता है उससे लार ज्यादा बनती है। लार पैदा होने से खाना मेरा जल्दी हजम हो जाता है। पेट हलका होने से मैं खुश रहती हूं। मैं जितना खुश रहूंगी उतना ही ज्यादा मीठा-मीठा दूध दे पाऊंगी।"

देखते-देखते दोनों में अच्छी खासी दोस्ती हो गई। शाम होते ही गौरी सारंगी को याद करती और रंभाने लगती। सारंगी भी अपना खेल छोड़ गौरी के पास भागा चला आता।

कुछ दिनों के बाद सारंगी ने देखा गौरी के पास छोटा सा बच्चा खड़ा है और वह उसे चाट रही है। देखने में बड़ा सुंदर, कोमल सा दूध सा सफेद। उसका मन चाहा कि वह भी उसे छूए, प्यार करे।

घर में सब गौरी और उसकी बछिया नूरी का बहुत ध्यान रखते। एक हफ्ते में तो नूरी और भी सलोनी लगने लगी। सारंगी को नूरी के साथ खेलना बड़ा अच्छा लगता।

एक शाम जब सारंगी गौरी से मिलने गया, तो वह उसे बड़ी सुस्त लगी। नूरी उस समय अपनी मां का दूध पी रही थी। उसके नजदीक आया तो वह चौंक पड़ा, "अरे गौरी तू रो रही है?"

सहानुभूति के दो शब्द सुन उसके आंसू तेजी से बह चले। सारंगी ने उसे पुचकारा, "गौरी क्या हुआ?"

"कल मैंने दूध कम दिया था। दद्दा ने सोचा, नूरी कुछ ज्यादा ही दूध पी गई है। इसलिए आज उन्होंने पहले नूरी को मेरे से दूर खूंटे से बांध दिया। फिर सारा दूध निकाल लिया। मैं खड़ी-खड़ी लाचार अपने भूखे बच्चे को तड़पता देखती रही। उसके हिस्से का दूध तुम सबके लिए देती रही। यह कैसी मजबूरी है।"

"रो मत गौरी। यह फिर न होगा।"

"कल भी होगा। क्योंकि दूध मैंने आज भी कम दिया है।"

"आज कम क्यों दिया?"

"आज मैं बहुत दुखी थी। ऐसे में दूध नहीं दे पाती। ज्यादा खुश होने पर ही ज्यादा दूध दे पाती हूं।"

"तू ठीक कह रही है गौरी। मैं बिलकुल तेरी तरह हूं। मैं भी खुश होने पर खूब पढ़ता हूं। पाठ फटाफट याद हो जाता है। दुखी होकर पढ़ने बैठता हूं तो धिल्ला भर दिमाग में नहीं घुसता। देखता हूं, तेरे लिए क्या कर सकता हूं।"

सारंगी घर पहुंचा। मेज पर दूध का गिलास रखा था। उसने उसे छुआ तक नहीं। बार बार उसकी आंखों के सामने गौरी का आंसू भरा उदास चेहरा आ रहा था।

मां ने टोका, "अरे तूने दूध अभी तक नहीं पीया।"

"मां मैं नूरी के हिस्से का दूध नहीं पी सकता। आज वह भूखी है। मैं भी भूखा रहूंगा।" सारंगी कहा।

"ओह बछिया की बात कर रहा है। तुझे कैसे मालूम वह भूखी है?"

"बाबा ने उसे गौरी से अलग कर दिया और सारा दूध निकाल लाए। अब नूरी क्या पीयेगी। मां मेरे भूखे रहने से आप कितनी दुखी हो। गौरी गैया भी इतनी ही दुखी है।" कहते-कहते उसकी आंखें भर आईं।

सारंगी की मां उसका मुंह देखती रह गई। फिर वह प्यार से बोलीं, "बेटा, कल से न नूरी भूखी रहेगी और न ही उसकी मां उदास। अब अपनी भूख हड़ताल तो बंद कर दे।"

पर सारंगी भूखा ही सो गया। बाबा को जब पता चला, तो विचलित हो उठे। सारी रात करवटें बदलते रहे। वह सुबह जानकर दूध दुहने देर से पहुंचे, तब तक नूरी अपनी मां का दूध भरपेट पी चुकी थी। उस दिन वाकई में गौरी ने खूब दूध दिया।

सारंगी ने भूख हड़ताल खतम कर गौरी का मीठा दूध छककर पीया। फिर तुरंत वह नूरी और गौरी से मिलने चल दिया। उस समय नूरी उछलती कूदती अपनी मां के चक्कर लगा रही थी

उनको खिला-खिला देख, वह भी खिल उठा। ❀

रचनाकार को जानिए

सुधा भार्गव : इन्हें बच्चे शुरू से ही बहुत अच्छे लगते हैं। हमेशा महसूस किया कि उनके संसर्ग में स्वर्ग सा आनंद है । बिरला हाई स्कूल कलकत्ता में 22 वर्षों तक हिन्दी भाषा का शिक्षण कार्य किया। पेंटिंग, योगा, अभिनय, कविता पाठ में अभिरुचि। बालकथा की कई पुस्तकों के साथ एक बाल उपन्यास भी आ चुका है। अब किंडल पर किताबें आ रही हैं।

धारावाहिक-3

ईल्ली और नानी (उपन्यास)

नानी के अंडे

पिछले अंक में आपने पढ़ा :

एक नन्ही मक्खी ईल्ली की मां कीटाणुओं की व्यापारिन थी। एक बार मां के न रहने पर व्यापार करने इल्ली अपनी नानी के पास गई। नानी उसे देखकर खूब खुश हुईं। वह ईल्ली को व्यापार के गुण सिखाने लगीं। नानी उसे वहां-वहां ले गई, जहां व्यापार की खूब संभावना थी। ईल्ली को खूब मजा आया। एनाफिलीज से मिलकर ईल्ली को आश्चर्य हुआ। वह मच्छर केवल एक ही तरह के कीटाणुओं की व्यापारिन थी। ईल्ली को आज मच्छर जाति के बारे में रोचक बातें जानने को मिलीं। एक सुबह नानी ने ईल्ली को उठाया और कहने लगीं, ''देखो ईल्ली, यह हरे निशान वाली जगहों पर हमें अपने कीटाणुओं की बस्ती बसानी है। मैंने आज का दिन अंडे देने के लिए चुना है।'' अब आगे...

''नानी, क्या बिना सही मौसम के भी तुम अंडे दे सकती हो?'' ईल्ली ने प्रश्न किया।

''लगता है, तुमने आज का अखबार नहीं देखा। उसमें मौसम विभाग के अनुसार अभी कुछ दिनों तक तेज गरमी पड़ने का समाचार छपा है। तुम तो जानती ही हो कि हमारी प्रजाति केवल गरमी और वसन्त ऋतु में ही अंडे देती है। अतः अब गरमी पड़ने की बात पढ़कर मैंने समय का उपयोग कर अंडे देने की योजना बना ली है। आओ अब उपयुक्त जगह तलाशते हैं।'' कहते हुए नानी मक्खी ने उड़ान भरी। पीछे-पीछे ईल्ली भी उड़ चली।

रास्ते में नानी ईल्ली से कहने लगी, ''वैसे तो मुझे घोड़े की लीद, मुर्गियों की बीट, मनुष्य का मल, सड़े-गले फल और सब्जियों में अंडे देना बहुत पसन्द है किंतु...''

''किंतु क्या नानी?''

''वहां अंडों के नष्ट होने का खतरा रहता है। आओ, हम उस गौशाला की ओर चलते है।''

दोनों मक्खियां वहां पहुंची, जहां गोबर का विशाल ढेर लगा हुआ था। देखकर नानी खुश होती हुई बोलीं, ''यहां मेरे बच्चे आसानी से पलेंगे। पांच सौ से लेकर छः सौ अंडे मैं एक ही बार में दे दूंगी।''

''बस, इतने ही अंडे नानी?''

''हां, बस एक बार में हमारी प्रजाति इतने ही अंडे दे सकती है।'' और नानी ने अंडे देना शुरू किया। अभी उसने कुल सौ-डेढ़-सौ अंडे ही दिये होंगे कि एक मेढकी की नजर उस पर पड़ी। घात लगाए वह आगे बढ़ी। नजदीक और नजदीक पहुंचती गई, जहां नानी मक्खी अंडे दे रही थी। ईल्ली ने मेढकी को आगे बढ़ते देख लिया था। वह अपनी नानी को सतर्क कर पाती, इससे पूर्व ही मेढकी लसलसी जीभ एक झटके से बाहर निकलती है।

''बाप-रे!'' कहती हुई नानी उड़ी और उसके साथ-साथ ही ईल्ली भी। दोनों हांफती हुई घर पहुंचीं। घर में नानी को मीठा पेय पीने को दिया गया, तब उन्होंने पुनः स्फूर्ति महसूस किया। ईल्ली नानी के पंखों को सहलाती है।

खिता से एक मुलाकात

इतने में नौकरानी मक्खी ने आकर सूचना दी, "एक टिड्डा आया है। वह आपसे कुछ खुफिया बात करना चाहता है।"

रानी मक्खी ने उसे अंदर भेज देने का आदेश दिया। नौकरानी मक्खी ने टिड्डे को अंदर भेज दिया। सिर झुकाकर टिड्डा बोला, "नमस्ते रानी मक्खी। मैं अफ्रीका का प्रवासी यूथी टिड्डा दल का नायक 'खिता' हूं। हम लोग फसलों पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहे हैं। चूंकि यह आपका क्षेत्र है, इसलिए आपको सूचना देना आवश्यक समझा गया।"

"तुम फसलों पर आक्रमण क्यों करना चाहते हो? जानते नहीं, आज के वैज्ञानिक युग में तुम्हें मार भगाने के कई तरीके ढूंढ लिए गए हैं। वे तुम्हें मारने के लिए वायुयान से जहरीले कीटनाशकों का छिड़काव कर सकते हैं। उससे न केवल तुम्हें, बल्कि हमें भी खतरा रहेगा। बेहतर यही होगा कि तुम चले जाओ। वर्ना तुम्हारे साथ हम भी मारी जाएंगी।"

खिता बोला, "रानी मक्खी, हमारी विवशता को समझो। इस बार वर्षा अच्छी होने से फसलें अच्छी हुई हैं। हरी-हरी पत्तियों का पर्णहरित हमें बहुत पसंद है। हमारा दल कल ही खेतों की ओर कूच कर जाएगा और संभावना है कि दो तीन दिन में धावा बोल देंगे। आप घरेलू मक्खियां बस्ती की ओर भाग जाना, खेतों की ओर मत जाना।"

"तुम्हारे इस आक्रमण से मेरा तो सारा व्यापार ही चौपट हो जाएगा। मैं कैसे अपने कीटाणुओं को जहरीले कीटनाशकों से बचा पाऊंगी। ईल्ली बेटी, तुम ही समझाओ इसे कुछ।" रानी मक्खी ने ईल्ली की ओर देखकर कहा।

इस पर ईल्ली ने खिता से कहा, "क्या तुम 10-15 दिन नहीं ठहर सकते। प्लीज मेरे खातिर, वर्ना हमारे अंडे भी बेकार हो जाएंगे और हमें कई ट्रक कीटाणुओं का नुकसान होगा सो अलग।" ईल्ली ने खिता से इतने मोहक ढंग से आग्रह किया कि खिता इनकार नहीं कर सका।

"तुम सुन्दर ही नहीं विनम्र भी हो। विनम्र स्वभाव वाला दूसरों का मन जीत सकता है। तुम्हारी बात मुझे स्वीकार है।" इतना कहने के बाद खिता उड़ने को हुआ। ईल्ली ने उसे शर्बत पिलाना चाहा, तो नानी ने टोक दिया, "भला टिड्डे कहां जानते हैं मीठा शर्बत पीना। वे तो बस चबर-चबर हरी पत्तियां चबाना जानते हैं, जानवरों की तरह।" कहकर नानी हंस पड़ी, पर ईल्ली को उनका बेसमय हंसना अच्छा नहीं लगा।

खिता के बात मान लेने से यूथी टिड्डी दल के कारण आया संकट एक बार टल चुका था। ईल्ली और नानी फिर भविष्य की योजनाओं में व्यस्त हो गईं। आज उन्हें कीटाणुओं के कई ट्रक कच्ची बस्ती में खाली करने थे। ट्रक के काफिले के साथ वह अपने माल को ले कच्ची बस्ती की ओर निकल पड़ी।

वहां उन्होंने पेचिश, तपेदिक और कुष्ठ रोगों के कीटाणुओं की खूब बिक्री की। मुंहमांगी कीमत पर उन्होंने टाईफाईड के कीटाणु बेचे। उनके पास अभी काफी माल था, किंतु शाम होने से पहले उन्हें अन्य जगह भी कीटाणुओं को पहुंचाना था। अतः सभी कीटाणुओं को कॉलोनी बसा लेने का आदेश दे, वे ट्रकों का काफिला लेकर आगे चल दीं।

अच्छी जगह पाकर कीटाणु भी बहुत खुश थे। काफी समय से अच्छे वातावरण और भोजन के अभाव में खोल में बंद जीवन काट रहे थे। अब वे फटाफट अपनी संख्या बढ़ाकर आबादी बढ़ा लेंगे। विभिन्न तरह की दवाओं के आने से उनके जीवन को कई खतरे थे। अक्सर उनके बीच आयोजित गोष्ठियों में इसी विषय की चर्चा रहती। उन्हें चिंता थी कि यदि यही हाल रहा, तो एक दिन वे समूल नष्ट हो जाएंगे।

ऐसे में मक्खियां उन्हें हमेशा दिलासा देतीं। वे सब मक्खियों के आभारी थे। वे न होती, तो भला वे एक जगह से दूसरी जगह कैसे पहुंच पाते?

अगले अंक में जारी...

रचनाकार को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की वह संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

होमवर्क

चूहा बोला, काकी मुझको,
होमवर्क करवा दो।
कौन बनाता शहद मुझे तुम,
उसका नाम बता दो।।

काकी बोलीं, पुष्प-रसों को,
चूस के लाने वाली।
मधुमक्खी ही होती उससे,
शहद बनाने वाली।।

चूहा बोला, काकी कोयल,
इतना मीठा गाए।
ऐसी मीठी वाणी कोयल,
कहो कहाँ से लाए?

काकी बोलीं, कोयल हरदम
मीठा-मीठा गाता है।
क्योंकि सदा ही वह बागों से,
मीठे फल ही खाता है।।

चूहा बोला, कौवे की तो,
आदत बड़ी अजूबी।
बतलाओ उसमें भी होती,
है क्या कोई खूबी।।

काकी बोलीं,यूँ तो होती,
उसकी कर्कश वाणी।
पर्यावरण स्वच्छता में हो,
वह तो बेहतर प्राणी।।

अपने लेखक को जानिए

वसीम अहमद नगरामी : अध्यापन के साथ-साथ विगत तीन दशकों से देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, व्यंग्य, पहेलियों आदि का प्रकाशन। नंदन, बच्चों का देश, बाल भास्कर, बालभूमि, बालवाणी, बाल भारती आदि में लेखन। एक पुस्तक प्रकाशित।

कोई पेड़ लगाओ तुम

कभी-कभी जब समय मिले तो
कोई पेड़ लगाओ तुम,
अपनी इस धरती माता को
बंजर मुक्त कराओ तुम।

धूप तप रही अग्नि जैसी
और परिंदे झुलस रहे,
आसपास न हरियाली है
मारे जल के सिसक रहे।

जल्द नहीं प्रयास किए तो
सब पर आफत आएगी,
मारे हरियाली के धरती
माता खुद जल जाएगी।

चहुँ ओर पानी का संकट
मुँह बाए प्रलाप रहा,
जंगल हमने काट दिए हैं
जन-जन कर यह पाप रहा।

मिलकर वृक्ष बचाने होंगे
करना होगा मिलकर काम,
हरियाली और जल के मारे
मच न जाए अब कोहराम।

राम उठो तुम श्याम उठो तुम
आओ वृक्ष लगाएं हम,
धरती के इस सूनेपन को
मिलकर दूर भगाएं हम।

अपने लेखक को जानिए

राजकुमार निज़ात : बाल साहित्य की दस विभिन्न पुस्तकों सहित 50 पुस्तकें दर्जनाधिक विधाओं में प्रकाशित। तीन कृतियां अंग्रेजी पंजाबी व मलयालम भाषा में अनुवादित। हरियाणा साहित्य अकादमी के सम्मान सहित कुछ सम्मान प्राप्त। इनके साहित्य के विभिन्न पक्षों पर कई एमफिल व पीएचडी की गईं।

बड़ी मेहनती गिलहरी

तुमने अपने घर के आसपास गिलहरियों के फुदकते जरूर देखा होगा। फुदकना आमतौर पर चिड़ियों के लिए इस्तेमाल होता है, पर चिड़ियों की तरह गिलहरियां भी एक जगह ज्यादा देर नहीं टिकतीं। हमेशा इधर से उधर घूमती, कूदती दिखती रहती हैं।

कैसी होती है गिलहरियां

गिलहरियों की गिनती छोटे जीवों में होती है। इनका आकार 7 से.मी. से लेकर अधिकतम 2.40 फीट और और वजन 10 ग्राम से लेकर 8 किलोग्राम तक होता है।

गिलहरियों का शरीर छरहरा, पूंछ बालों से युक्त और आंखें बड़ी होती हैं। उनके रोयें मुलायम व चिकने होते हैं, हालांकि कुछ प्रजातियों में यह रोयें अन्य प्रजातियों की तुलना में काफी घने होते हैं। अलग-अलग प्रजातियों और एक ही प्रजाति के मध्य इनका रंग अलग-अलग या भिन्न भी होते हैं।

पिछले पैर आमतौर पर आगे के पैरों से लंबे होते हैं और पैरों के नीचे अंदर की तरफ मांसल गद्दियां होती हैं, जिस कारण यह कहीं भी जा पाती है, गिरती नहीं है।

कहां-कहां होती है

गिलहरी वर्षायुक्त वनों से लेकर रेगिस्तान तक में रह सकती है। यह सिर्फ उच्च ध्रुवीय क्षेत्रों और अत्यंत सूखे स्थानों पर रहने से बचती हैं। गिलहरियां मुख्य रूप से शाकाहारी होती हैं और बादाम और बीजों पर जीवित रहती हैं। परंतु समय के साथ भोजन की कमी के कारण अब ये मांसाहारी भी होने लगी हैं।

कमाल की नजर

इनकी नजर बहुत अच्छी होती है, जो कि वृक्षों पर रहने वाले जीवों के लिए जरूरी है। चढ़ने और मजबूत पकड़ के लिए इनके पंजे बहुत काम आते हैं। ये पेड़ों की कोटर में रहना पसंद करती हैं।

मजबूत दांत

इनके कुतरने के लिए बड़े दांत होते हैं जो कि पूरे जीवन विकसित होते रहते हैं। भोजन को अच्छी तरह से पीसने के लिए पीछे की तरफ चौड़े दांत होते हैं।

व्यवहार

गिलहरी वर्ष में एक या दो बार कई बच्चों को जन्म देती है। बच्चे बिना दांत के और अंधे होते हैं। लगभग सभी प्रजातियों में, केवल मादा ही बच्चों की देखभाल करती है। करीब दो महीने तक वह बच्चों को दूध पिलाती है। एक वर्ष के अंदर बच्चे वयस्क हो जाते हैं।

भूमि पर रहने वाली गिलहरियां आमतौर पर सामाजिक होती हैं किंतु वृक्षों पर रहने वाली गिलहरियां अकेले रहना पसंद करती हैं।

उड़न गिलहरी

कुछ गिलहरियां उड़ने वाली भी होती हैं। ये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर छलांग लगाकर चली जाती हैं। भूमि और वृक्षों पर रहने वाली सभी गिलहरियां दिनचर होती हैं, जबकि उड़न गिलहरियां रात्रिचर होती हैं।

खाना

गरमियों का शुरूआती समय गिलहरियों के लिए बहुत कठिन होता है क्योंकि उस समय बोये गए बादामों के अंकुर फूटते हैं और वह गिलहरियों के खाने के लिए उपलब्ध नहीं होते, इस दौरान गिलहरी मुख्य रूप से पेड़ों की कलियों पर निर्भर रहती हैं।

वैसे गिलहरी संकट के समय काम आने के लिए अन्न संग्रह के लिए भी प्रसिद्ध है। गिलहरियों के आहार में मुख्यतः अनेकों प्रकार के पौधीय भोजन होते हैं जिसमें बादाम, बीज, फल और हरी सब्जियां शामिल हैं। हालांकि कुछ गिलहरियां मांसाहारी भी होती हैं। वे कीड़े, अंडे, छोटी चिड़ियां, सांप के बच्चे खाने के लिए भी जानी जाती हैं। वास्तव में तो कुछ ध्रुवीय गिलहरियां पूर्ण रूप से कीड़ों के आहार पर ही निर्भर होती हैं।

डॉग फूड बैंक

रोहित ने आज फिर कचरा उठाने वाले से निवेदन करते हुए कहा, "भैया इन चीजों को उठाकर अपनी गाड़ी में ना डाला करें। कुत्ते दोपहर या शाम तक खा लेंगे या फिर कौवे, गिलहरी, गौरैया और कबूतरों के हिस्से में आएगा, तो उनका पेट भरेगा इन चीजों से।"

कचरा उठाने वाले सफाई कर्मी ने आज भी वही जवाब दिया, जो हमेशा देता था, "बेटा, तुम मेरी मजबूरी समझो। अगर साहब लोगों ने देख लिया, तो मुझे फटकार मिलेगी कि मैंने सफाई ढंग से क्यों नहीं की।"

जब भी मिलते, यह संवाद रोहित और सफाई कर्मी के बीच हमेशा ही होता। रोहित को बड़ा दुख होता कि खाद्य वस्तुएं इस प्रकार नष्ट हो जाती हैं और कुत्ते भूखे रह जाते हैं।

दरअसल रेलवे स्टेशन के पास एक विशाल प्रांगण था। वहां सुबह-सुबह बहुत सारे लोग मॉर्निंग वॉक के लिए आते थे। नजदीक ही महाप्रबंधक का आवास था। उस क्षेत्र में कम से कम 30 से 35 कुत्ते थे, जो बाहर कहीं नहीं जाते थे। उसी दायरे में घूमते, सोते और खाते।

सुबह दो-तीन घंटे तक प्रातः भ्रमण करने वालों के बाद पूरे दिन वहां सन्नाटा ही रहता था। टहलने या जोगिंग करने वाले लोग वहां घूमने वाले कुत्तों, गिलहरियों, कौवों और कबूतरों के लिए कुछ ना कुछ ले आते थे। कोई बिस्किट, कोई दूध-ब्रेड, कोई दाने, कोई भात, तो कोई रोटियों के टुकड़े डाल देता। लेकिन इनकी मात्रा अक्सर बहुत ज्यादा होती थी। सभी जानवरों के खाने के बाद भी काफी कुछ बचा रह जाता। लेकिन पेट भर जाने के कारण उस वक्त में और कुछ भी खाने की स्थिति में नहीं रहते।

10 बजे सफाई कर्मी आता, तो वहां उसे बारीकी से सफाई करनी पड़ती क्योंकि 10:30 बजे रेलवे महाप्रबंधक वहां से गुजरते थे। उन्हें खाद्य पदार्थों के टुकड़े व किसी प्रकार की गंदगी बिल्कुल अच्छी नहीं लगती थी।

रोहित गरीब परिवार से था। एग्जाम देने के बाद वह रिजल्ट आने

का इंतजार कर रहा था। दो पैसे कमाने के उद्देश्य से वह प्रबंधक के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने जाता था। वापस लौटते समय उसे 2 बज जाते थे। शाम को वह फिर प्रबंधक की बेटी को पढ़ाने जाता, जो स्कूल से 4 बजे लौटती थी। दोपहर और शाम को रोहित देखता कि कुत्ते भूख से बेचैन होकर पड़े रहते थे या फिर सोए रहते। एकाध बार उसने एक दो पैकेट बिस्कुट खरीदे लेकिन उनकी मात्रा कम होने के कारण कुत्तों में घमासान लड़ाई हो गई। इसलिए उसने ऐसा करना बंद कर दिया।

रोहित की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह रोज कुत्तों व पशु पक्षियों के लिए कुछ खरीद सके। संकोचवश उसने महाप्रबंधक के घर में भी इस बात का जिक्र करना उचित नहीं समझा।

एक दिन वह जानवरों की इसी स्थिति के बारे में चिंतन करता हुआ जा रहा था। तभी उसने रास्ते में देखा कि एक बड़ी सी बसनुमा गाड़ी खड़ी थी। उसके पास गरीबों की लंबी लाइन लगी हुई थी। गाड़ी पर लिखा हुआ था "गरीब रोटी बैंक।" कर्मचारी सबको उनकी पसंद के अनुसार रोटी सब्जी या दाल भात दे रहा था।

कुछ सोचकर रोहित भी लाइन में लग गया। काफी देर बाद उसकी बारी आई तो उसने रोटी बांटने वाले से कहा, "मुझे कुत्तों, गिलहरियों के लिए कुछ चावल और रोटियां दे दीजिए। सब्जी की जरूरत नहीं। मुझे अपने लिए कुछ भी नहीं चाहिए।"

उसकी बात सुनकर खाना बांटने वाले कर्मचारी ने उसे दुत्कार कर भगा दिया। उसने ताना मारते हुए कहा, "एक काम कर। तू अपना रोटी बैंक खोल ले उनके लिए, 'कुत्ता रोटी बैंक'।"

रोहित अपमानित होकर वहां से घर की तरफ रवाना हो गया। लेकिन उसके दिमाग में रोटी बैंक के कर्मचारी की बात से एक आइडिया आया। आईडिया मिलते ही वह खुश हो गया।

घर पहुंचकर उसने एक बड़े थैले में चार डिब्बे और एक छोटा सा सफाई वाला ब्रश डाल लिया।

अगले दिन वह 9 बजे ही ट्यूशन पढ़ाने निकल गया। उसे 10 बजे से पहले वहां पहुंचना था। वहां पहुंचकर उसने इधर-उधर पड़े बिस्कुट के टुकड़े एक डिब्बे में डाले, दूसरे में भात, तीसरे में रोटी के टुकड़े और चौथे में अनाज के दानों को ब्रश की मदद से इकट्ठा करके डाल दिया।

10 बजे स्वीपर आया, तो उसने कहा, "भैया! आज से आपके आने से पहले ही मैं इन खाद्य पदार्थों को अलग अलग डिब्बे में डाल दिया करूंगा। यह पशु-पक्षियों का फूड बैंक है। ये डिब्बे एक तरफ दीवार के पीछे रख रहा हूं, किसी दिन मुझे आने में देर हो जाए, तो मेहरबानी करके आप इन्हें डिब्बे में भर देना। मैं इनकी कुछ मात्रा दोपहर में और कुछ मात्रा रात को जाते समय पक्षियों और कुत्तों के लिए डाल दिया करूंगा ताकि उनका पेट भर जाए। इस प्रकार इन्हें सुबह, दोपहर, शाम तीनों समय खाने को मिल जाएगा।"

रोहित के इस प्रयास की स्वीपर ने खूब सराहना की और जब मॉर्निंग वॉक करने वालों को इस बैंक का पता चला, तो उन्होंने रोहित को हर महीने हजार रुपए अलग से देने का वादा किया ताकि कभी फूड की कमी पड़े, तो वह खरीदकर दे सके या फिर खुद के लिए कुछ ले सके।

अब रोहित खुश था। ❀

अपने लेखक को जानिए

शिखर चंद जैन : तीन मोटिवेशनल पुस्तकों, एक बालकथा संग्रह,एक लघुकथा संग्रह के लेखक, बाल कहानियों, बालोपयोगी लेख, स्तंभकार, व्यक्तित्व विकास व मोटिवेशनल आर्टिकल्स के नियमित लेखक। बीते 33 वर्षों से राष्ट्रीय हिंदी दैनिकों व पत्रिकाओं में नियमित लेखन।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें

महिला विश्वकप क्रिकेट

2022 का आईसीसी महिला क्रिकेट विश्वकप न्यूजीलैंड में आयोजित हुआ। यह मूल रूप से 6 फरवरी से 7 मार्च 2021 के लिए निर्धारित किया गया था, लेकिन कोविड-19 महामारी के कारण एक वर्ष के लिए स्थगित कर दिया गया था। फिर 15 दिसंबर 2020 को, घोषणा हुई कि टूर्नामेंट 4 मार्च से 3 अप्रैल 2022 तक होगा।

न्यूजीलैंड को मेजबानी के लिए चुना गया था। कोविड 19 महामारी के कारण क्वालिफायर टूर्नामेंट को स्थगित कर दिया गया था। उनमें से रैंकिंग के आधार पर बांग्लादेश, पाकिस्तान और वेस्टइंडीज को टूर्नामेंट में शामिल कर लिया गया।

मेजबान न्यूजीलैंड के साथ ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, भारत और साउथ अफ्रीका शीर्ष टीमों के रूप में पहले ही चुनी जा चुकी थी।

इस तरह आठ टीमों के बीच यह मुकाबला शुरु हुआ।

न्यूजीलैंड के कुल 6 शहरों में सारे मैच आयोजित हुए। इस बार के इस टूर्नामेंट में सभी टीमें एक-दूसरे के साथ खेलीं और शीर्ष चार टीमों को सेमीफाइनल में पहुंचने का मौका मिला।

ICC WOMEN'S
CRICKET WORLD CUP
NEW ZEALAND 2022

शुरू से अंत तक कुल 31 मैचों का आयोजन हुआ। पहला मैच मेजबान न्यूजीलैंड और वेस्टइंडीज के बीच हुआ और इसमें वेस्टइंडीज ने न्यूजीलैंड की मजबूत टीम को हराकर तहलका मचा दिया। न्यूजीलैंड की टीम विश्व की शीर्ष टीमों में स्थान रखती है, फिर भी इस टूर्नामेंट में उनका प्रदर्शन बहुत खराब रहा।

भारत को सेमीफाइनल तक पहुंचने का दावेदार माना जा रहा था परंतु भारतीय टीम बहुत खराब खेली

और वेस्टइंडीज को छोड़कर किसी भी बड़ी टीम को नहीं हरा पाई।

शुरुआती तीन मैच हार कर इंग्लैंड के बाहर होने का खतरा बढ़ रहा था, परंतु उन्होंने गति पकड़ी और एक के बाद एक मैच जीतते हुए सेमीफाइनल में जा पहुंची। सबको चौंकाते हुए सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका और वेस्टइंडीज की टीमें भी पहुंचीं जबकि ऑस्ट्रेलिया की टीम ने एक चैंपियन की भांति खेलती हुई अपने लीग के सारे मैच जीतकर ग्रुप में टॉप किया।

सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला वेस्टइंडीज से हुआ और इंग्लैंड का सामना साउथ अफ्रीका से। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने अपने प्रतिद्वंदी को रौंदते हुए फाइनल में पहुंचने का श्रेय प्राप्त किया।

उम्मीद थी कि फाइनल रोमांचक सिद्ध होगा, परंतु इस बार ऑस्ट्रेलिया की टीम कुछ और ही सोच कर आई थी। उसने सारे रिकॉर्ड को तोड़ते हुए फाइनल में 5 विकेट खोकर 356 रन का विशाल स्कोर बनाया। यह आईसीसी के किसी भी टूर्नामेंट के फाइनल का अब तक का बड़ा स्कोर है, चाहे वह पुरुषों का हो या महिलाओं का। शुरू से लग रहा था कि इंग्लैंड की टीम इस स्कोर तक नहीं पहुंच पाएगी। बस लोगों की दिलचस्पी थी कि हार का अंतर कितना रहता है। इंग्लैंड की टीम 285 रन ही बना पाई और इस तरह 71 रनों से फाइनल जीतकर ऑस्ट्रेलिया की टीम विश्व चैंपियन बन गई।

ऑस्ट्रेलिया पूरे टूर्नामेंट के दौरान अजेय रही और उसके खेल को देखकर लगा कि सच में एक विश्व चैंपियन टीम खेल रही है।

कुछ खास रिकार्ड्स

❐ ऑस्ट्रेलिया ने सातवीं बार ट्राफी पर कब्जा किया। यह एक विश्व रिकार्ड है।

❐ ऑस्ट्रेलिया की विकेटकीपर एलिसा हीली ने टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा 509 रन बनाए, जिसमें 2 शतक भी थे।

एलिसा हीली

❐ एलिसा हीली ने फाइनल में 170 रन की पारी खेली, जो विश्वकप फाइनल का रिकार्ड है।

❐ एलिसा हीली को 'प्लेयर ऑफ फाइनल' के साथ 'प्लेयर आफ टूर्नामेंट' भी चुना गया।

❐ एलिसा हीली के पति मिचेल स्टार्क पुरुषों की क्रिकेट टीम के सदस्य हैं और वह भी विश्व कप जीत चुके हैं। इस तरह दोनों पति-पत्नी विश्व विजेता हैं।

❐ इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टन ने सबसे ज्यादा 22 विकेट लिए।

❐ भारतीय कप्तान मिताली राज ने अपना छठा वर्ल्ड कप खेला जो एक रिकार्ड है।

❐ पांच विश्वकप में कप्तानी करने वाली मिताली राज पहली खिलाड़ी बनीं।

❐ विश्वकप में सबसे ज्यादा अर्धशतक का रिकार्ड अब मिताली राज के नाम है।

❐ विश्वकप में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकार्ड अब भारत की झूलन गोस्वामी के नाम है।

मिताली राज और झूलन गोस्वामी

नाम का चक्कर

रविवार का दिन था और सुबह के दस बज रहे थे, पर दयाल अभी तक सो रहा था। तभी चीकू की तालियों की आवाज से उसकी नींद टूट गई।

वह उछलकर बिस्तर से नीचे उतरा और पलक झपकते ही चीकू के पास पहुंच गया। पिंटी, सैंडी, गज्जी और रवि भी उसके पास ही खड़े थे। दयाल को देखते ही सबकी हंसी छूट गई।

"अरे, तुम सब मुझे देखकर हंस क्यों रहे हो?" दयाल ने हैरान होते हुए पूछा।

"अभी पता चल जाएगा, ओ दयाल।" दयाल शब्द पर जोर देते हुए चीकू मुसकराया। तभी दयाल के बगीचे में काम कर रहा माली तुरंत दौड़ा आया। उसने पूछा, "तुमने मुझे बुलाया क्या?"

"नहीं माली काका, मैं तो इसे बुला रहा था। इसका नाम भी दयाल है ना।" चीकू ने दयाल की ओर इशारा करते हुए कहा।

"है न मजे की बात, यह भी दयाल, वह भी दयाल, हो गया ना कमाल।" सैंडी ने तुकबंदी की, तो एक बार फिर सब की हंसी छूट गई।

"क्या यार, तुम सब बोर मत करो मुझे।" कहते हुए दयाल उलटे पैर घर लौट आया। उसके चेहरे पर उदासी छा गई थी।

बुझे मन से उसने ब्रश किया और नहाने चला गया। नहाकर निकला ही था कि मां ने पुकारा, "दयाल, यह चाय ले लो।"

जब वह रसोईघर में पहुंचा, तो मां कांच के एक धारीदार गिलास में चाय डाल रही थी।

"मुझे नहीं पीनी इस मोटे भद्दे गिलास में चाय।" दयाल बोला।

"पर बेटा, तू चाय पियेगा ही क्यों, तेरे लिए तो मैंने आलू के परांठे और दूध का गिलास पहले से ही खाने वाली मेज पर रख दिया है। यह चाय तो दयाल माली के लिए है। मैंने उसे आवाज दी थी, पर शायद उसने

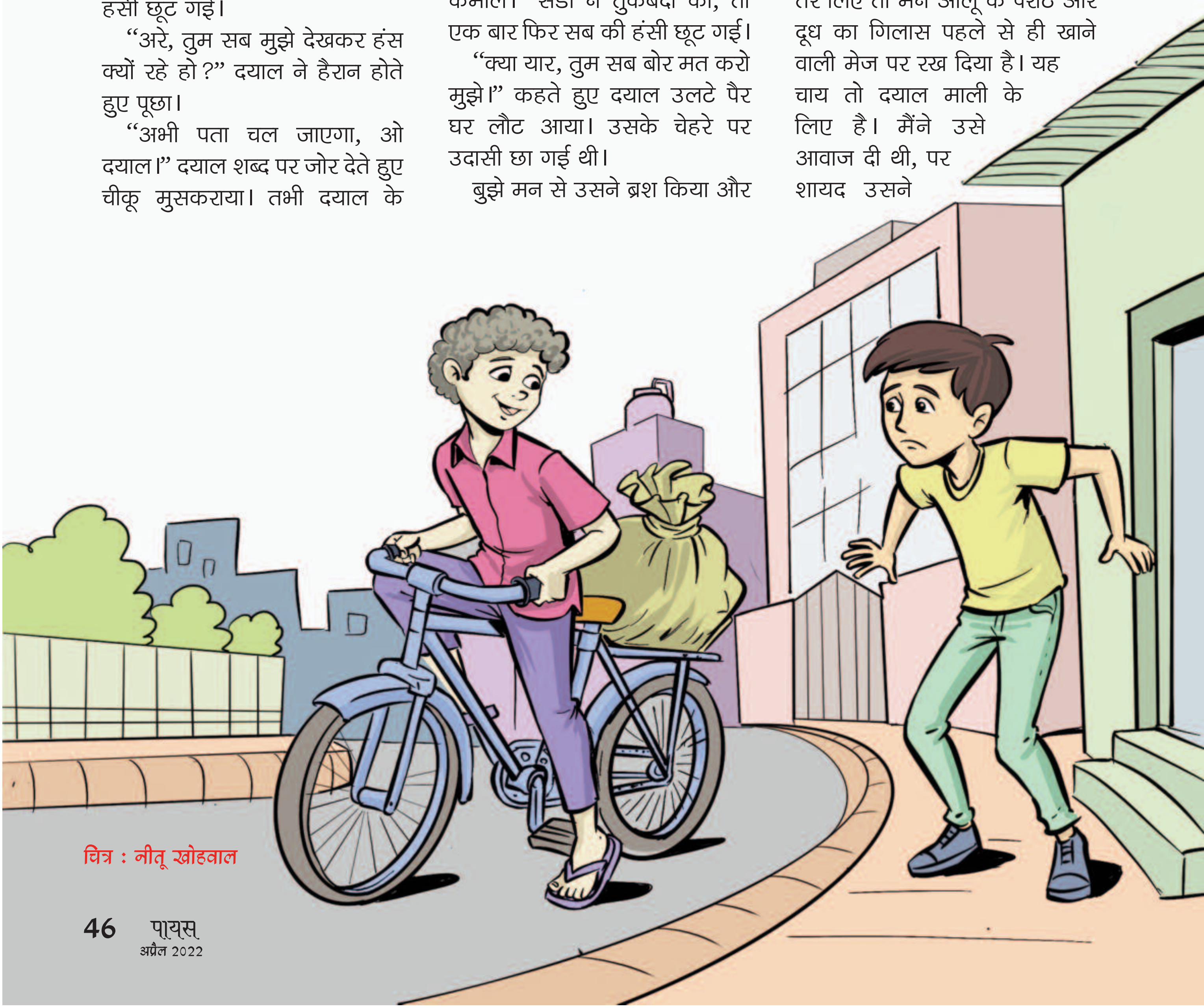

चित्र : नीतू खोहवाल

सुनी नहीं।" चाय का गिलास बाहर ले जाते हुए मां बोली।

तभी ताली फिर बज उठी। इस बार पिंटी था। दयाल के सभी मित्र एक दूसरे को इसी प्रकार तालियां बजाकर घर से बाहर बुलाते थे।

"अब क्या है?"

"कुछ नहीं भाई, बस यही पूछना था कि आज तुमने किस-किस सब्जी की पौध रोपी, किन-किन फूलों के बीज धरती में बोये?"

"क्या यही पूछने के लिए बुलाया था? जाओ अब मैं तुमसे बात नहीं करूंगा।" इतना कह दयाल वापस मुड़ने लगा, तो पास खड़े रवि ने छेड़ा, "जाओ, भाई जाओ, घर जाकर थोड़ा आराम कर लो, बेल की कटाई करते-करते थक गए होगे।"

रोआंसा हो आया दयाल घर आकर निढाल सा बिस्तर पर लेट गया। उसका मन बहुत अशांत था।

अगले दिन तो हद हो गई। पड़ोस में रहने वाली सिम्मी ने अपने ही घर से आवाज दी, "दयाल, ओ, दयाल।"

पहले तो दयाल चुप बैठा रहा, पर सिम्मी ने जब दुबारा पुकारा, तो उसे जाना ही पड़ा, "क्या बात है सिम्मी, मुझे क्यों बुलाया?"

"तो तुम आ गए, अच्छा इस गुलाब के पौधे को वहां लगा देना, दयालू जी।" एक ओर इशारा करते हुए सिम्मी ने कहा, तो पास खड़ी उसकी सहेलियां ऋतु और रीमा खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

तभी माली वहां आ गया और पौधा सिम्मी के हाथ से लेकर बताए गए स्थान पर लगाने लगा। दयाल को लगा, मानो वे सब उसका मजाक उड़ाते हुए कह रही हैं, "वाह! बेटा दयाल, हो गया ना खस्ता हाल।"

अब तो इस प्रकार की अन्य छोटी-मोटी बातों और दोस्तों की उसका मजाक उड़ाने की आदत से दयाल उदास रहने लगा। ना तो वह ढंग से खाता-पीता और ना ही पढ़ाई में उसका मन लगता।

एक दिन उसके पापा ने उसकी उदासी का कारण पूछा, तो वह बोला "पापा, मेरा नाम बदल दीजिए, अपने नाम के कारण मुझे सबके सामने शर्मिंदा होना पड़ता है। कोई दयाल माली कहकर पुकारता है, तो कोई दयालु और कोई आलू कहकर छेड़ता है। अब तो स्कूल के बच्चे भी मुझे परेशान करने लगे हैं।"

पहले तो उसके पापा ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की, पर उसकी जिद को देखते हुए उसका नाम बदलने का निर्णय ले लिया। दयाल को 'विजय' नाम बहुत पसंद था। उसके पापा ने कुछ प्रयत्न के बाद उसके जन्म सर्टिफिकेट में उसका नाम बदलवाया तथा उसके आधार पर स्कूल में भी उसका नाम बदल दिया गया और इस प्रकार वह 'दयाल' से 'विजय' हो गया।

अब वह बहुत प्रसन्न था। शाम को पार्क में जाने के लिए दोस्तों ने ताली बजाकर 'दयाल, दयाल' पुकारा, तो वह फटाक से बाहर निकला और तन कर सबके सामने खड़ा हो गया, "ओये जुग्गे, अब मेरा नाम दयाल नहीं, विजय है, समझे।"

"विजय।" सब फुसफुसाते हुए एक दूसरे की ओर देखने लगे।

"हां, कोई तकलीफ है क्या?" उसने पास पड़ी गेंद को जोर से किक मरते हुए कहा और फिर गेंद के पीछे दौड़ते हुए दूर निकल गया। उस शाम वह बड़े मन से खेला, सबसे हंसा, बोला और रात को डटकर भोजन करने के बाद सुख की नींद सोया। अब उसके दिन पहले की ही तरह मस्ती से गुजरने लगे।

एक दिन रवि ने सबको अपने जन्मदिन पर बुलाया। विजय उस दिन अपनी नीली चैक वाली शर्ट पहनना चाहता था, पर वह उसे कहीं नहीं मिली, तो उसने अपनी मां से उसके बारे में पूछा।

"वह तो धोबी ले गया है। तुम दूसरी शर्ट पहन लो।" मां ने कहा।

"नहीं, मुझे तो वही पहननी है। शर्ट पर लगा लाल और पीले रंग का स्टीकर मुझे बहुत पसंद है।"

अभी वह मां से कपड़ों के लिए जिद कर ही रह था कि कॉल-बेल बजी। मां तुरंत बाहर निकलीं। संयोग से धोबी प्रेस के कपड़े लेकर आया था।

"लो आ गए तुम्हारे कपड़े, पर पहले जरा ये दूसरे प्रेस होने वाले कपड़े धोबी को पकड़ा दो।" कपड़ों की पोटली उसे देते हुए मां बोलीं।

विजय कपड़ों की पोटली लिए बाहर गया, तो एक अपरिचित लड़के ने पोटली उसके हाथ से ले ली।

"तुम्हें तो पहले कभी नहीं देखा, तुम धोबी के बेटे हो क्या?"

"जी, पोटली को साईकल पर रखते हुए लड़के ने कहा।

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"जी, विजय।" इतना कहकर एक बार फिर उसे परेशान छोड़, वह लड़का साईकल चलाते हुए आंखों से ओझल हो गया। ❀

अपने लेखक को जानिए

सुकीर्ति भटनगर : बाल साहित्य की 33 एवं प्रौढ़ साहित्य की 8 पुस्तकें प्रकाशित। कुछ रचनाएं मराठी एवं कन्नड़ भाषा में अनुदित। उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा बाल साहित्य भारती पुरस्कार सहित लगभग 70 अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

टॉय ट्रेन के मजे

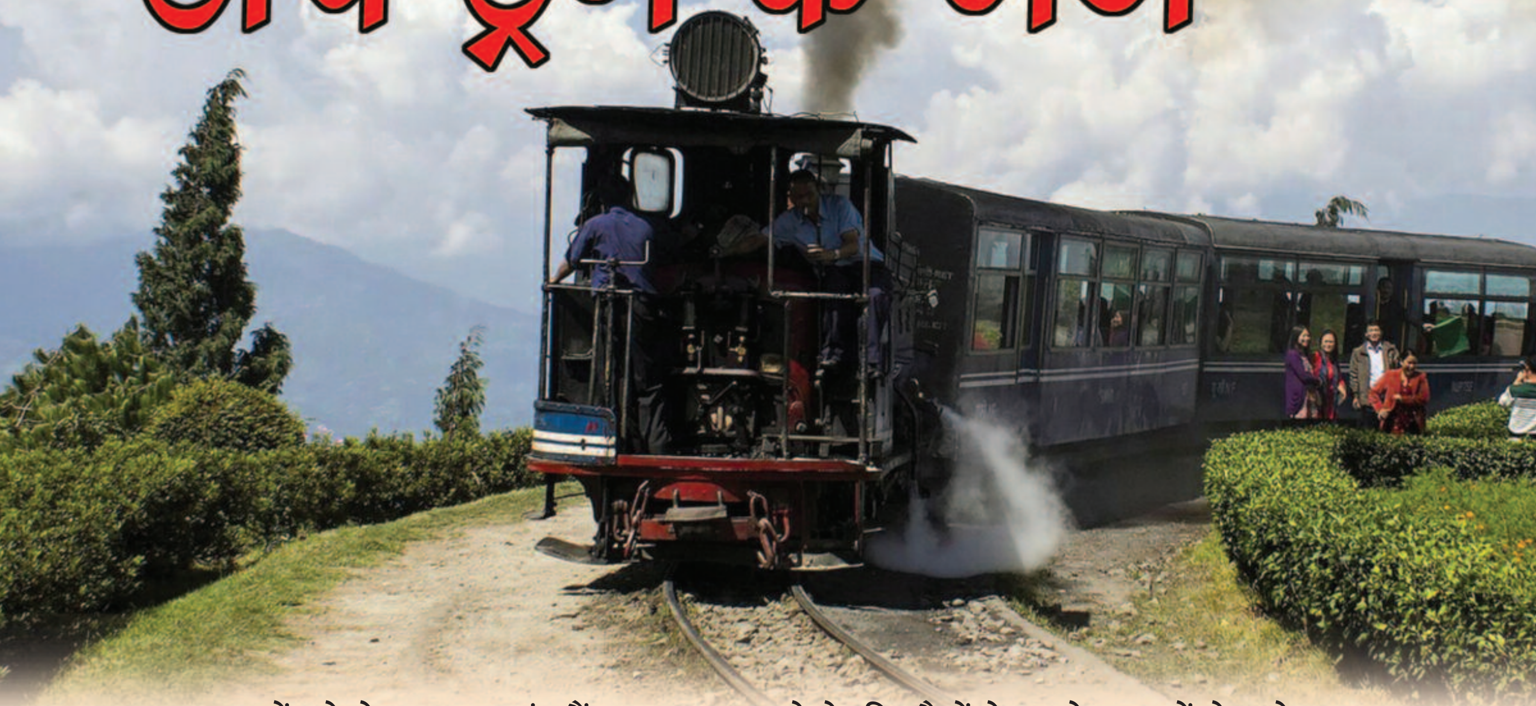

तुम बच्चों को ट्रेन बहुत पसंद हैं। शायद हर बच्चे के खिलौनों के कलेक्शन में ट्रेन सेट जरूर होता है। पर सोचो, अगर तुम्हें सचमुच के टॉय ट्रेन में बैठकर घूमने का मौका मिल जाए, तो कैसा मजा आएगा? भारत में कई जगह टॉय ट्रेन चलती है, जिनमें घूमने का अलग ही आनंद है।

दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे

दिल्ली से पहले कोलकाता अंग्रेजों की राजधानी थी। 1878 में कोलकाता से सिलिगुड़ी तक रेलवे लाइन बिछी। वहां से नजदीक दार्जिलिंग अंग्रेजों को बहुत पसंद था। वहां पहुंचने के लिए एक सड़क बनी जिस पर तांगे चलते थे। रोड को नाम मिला 'हिल कार्ट रोड'। उन दिनों की रेल कंपनी इस्टर्न बंगाल रेलवे कंपनी के एजेंट फ्रेंकलिन प्रेस्टेज ने सिलिगुड़ी से दार्जिलिंग तक रेल लाइन बिछाने का प्रस्ताव रखा और मंजूरी मिलने पर दो सालों में उस लाइन को तैयार कर दिया। 4 जुलाई 1881 को यह आम लोगों के लिए खोल दिया गया। करीब दो फीट चौड़े नैरो गेज की यह लाईन करीब 86 किलोमीटर लंबी है। बाद में 1964 में इस लाइन का विस्तार न्यू जलपाईगुड़ी तक कर दिया गया।

इस लाइन पर सफर करने में बड़ा मजा आता है। छोटे-छोटे रेलवे स्टेशन गजब का नजारा पेश करते हैं। अब भी इस लाइन पर भाप के इंजन दौड़ते हैं। बीच रास्ते में जब ये इंजन पानी लेने के लिए किसी टैंक के पास रुकते हैं, तो यह नजारा भी

देखने लायक होता है। अगर गाड़ी पटरी से उतर जाए तो क्रेन की जरूरत नहीं पड़ती। जैक लगाकर डिब्बे या इंजन को ट्रैक पर डाल दिया जाता है।

इसी रूट पर भारत का सबसे ऊंचा रेलवे स्टेशन घूम है। इस लाइन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि ट्रेन लाइन और सड़क साथ-साथ है। जब लोग ट्रेन के साथ-साथ अपनी गाड़ी में जा रहे होते हैं तो अद्भुत नजारा लगता है। यह सुंदर नजारा तुम फिल्म 'आराधना' में देख सकते हो। इस रेलवे लाइन को सन् 1999 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित किया गया। इससे पहले यह सम्मान केवल ऑस्ट्रिया के सैमेरिंग रेलवे को प्राप्त था।

कालका-शिमला रेलवे

कालका से शिमला तक की टॉय ट्रेन भारत की सबसे खूबसरत रेल लाइन मानी जाती है। हिमालय के पहाड़ों की खूबसूरती और प्रकृति का अनोखा नजारा लोगों को चमत्कृत कर देती हैं। इस लाइन का निर्माण दिल्ली-अंबाला-कालका रेलवे कंपनी ने 1898 में शुरू किया था। नवंबर 1903 को इसे लोगों के लिए खोला गया। और इसके बाद उस समय अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला पूरे भारत से रेल लाइन के द्वारा जुड़ गया। ट्रेन से जाने में सड़क की अपेक्षा दुगना समय लगता है, पर यात्री इस ट्रेन के सफर का आनंद लेना चाहते हैं। इसीलिए इस रूट पर किराया रेलवे के सामान्य किराए से ज्यादा है। अब इस रूट पर भाप इंजन के साथ साथ डीजल इंजन भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। नैरो गेज की इस 96 किलोमीटर लाइन पर पर कुल 103 सुरंगें आती हैं। इनमें से अब 102 सुरंगें इस्तेमाल में हैं। सबसे लंबी सुरंग बारोग में है, जो एक किलोमीटर से भी ज्यादा लंबा है। कहते हैं कि यहां सुरंग बनाना आसान नहीं था और अंग्रेज इंजीनियरों ने यह काम एक स्थानीय भाल्कू नामक फटीचर से व्यक्ति की मदद से किया। वह पागलों की तरह रहता था पर वह जो जगह बता देता, वहां से सुरंग बनाने का काम शुरू होता और उसमें सफलता मिलती। भाल्कू कैसे समझ लेता था कि कहां सुरंग बनाना ठीक रहेगा, कोई नहीं जानता था। लोग मानते थे कि उस पर भगवान का आशीर्वाद है। खास बात यह है कि काम पूरा होते ही भाल्कू उस जगह से कहां चला गया, कोई नहीं जानता।

कालका से चलकर यह टॉय ट्रेन 2076 मीटर की ऊंचाई पर स्थित शिमला पहुंचती है। रास्ते के छोटे-छोटे स्टेशन और उसके प्लेटफॉर्म पर जरूर उतरना। तुम्हें बड़ा मजा आएगा। कोई भीड़भाड़ नहीं और शांत तथा प्राकृतिक सुंदरता से युक्त इन प्लेटफार्मों को तुम कभी नहीं भूल पाओगे। बहुत पहले एक फिल्म आई थी 'लव इन शिमला'। इस फिल्म में हीरो इसी टॉय ट्रेन की सवारी कर शिमला पहुंचता है। 2008 में इसे विश्व धरोहर की सूची में शामिल किया गया।

कांगड़ा वैली टॉय ट्रेन

कभी कांगड़ा घाटी की सैर करना हो, तो इस ट्रेन से यात्रा जरूर करना। पठानकोट से जोगिंदर नगर तक के इस रूट की कुल दूरी 163 किलोमीटर है। इसे 1929 में आम आदमी के लिए खोला गया। इस रूट की खासियत है रास्ते के रमणीक दर्शनीय दृश्य। पूरे रास्ते में खुला-खुला पहाड़ी सौंदर्य पर्यटकों को मोह लेता है। करीब 13000 फुट की ऊंचाई पर इस ट्रेन की सैर को आप भूल नहीं पाएंगे।

नीलगिरी माउंटेन रेलवे

यह लाइन भारत के सबसे पुराने रेलवे लाइनों में से एक है। ऊंटी तक रेल ले जाने की बात अंग्रेजों ने तब सोची थी, जब भारत में रेलवे लाइन भी नहीं बिछी थी। यह बात 1845 की है। पर लाइन को स्वीकृति मिलकर बनते-बनते सन 1899 आ गया। यह रेलवे लाइन मेट्टूपलयम से ऊंटी तक है। जाने में तो करीब पांच घंटे लगते हैं पर वापसी में सफर करीब एक घंटे पहले पूरा हो जाता है। यह लाइन 46 किलोमीटर लंबी है। इस लाइन का सबसे ऊंचा स्टेशन है लवडेल। इस लाईन की सबसे बड़ी खासियत है कि पूरे रास्ते में 250 के करीब पुल हैं, जिन पर से रेल गुजरती है। कई जगह खड़ी चढ़ाई है और ट्रेन की स्पीड 13 किलोमीटर प्रति घंटे तक निर्धारित है। अपनी अनोखी प्राचीनता बनाए रखने के लिए आज भी अगर पर्यटक चाहें, तो उन्हें हाथ से काटी गई गत्ते की टिकटें दी जाती हैं। फिल्म 'दिल से' देखी थी तुमने। उसका हिट गाना 'चल छइयां छइयां' गाने पर शाहरुख खान ने इसी ट्रेन की छत पर डांस किया था। अगर 'मुसकुराहट' फिल्म देखने को मिले, तो जरूर देखना। ऊंटी में इस ट्रेन की खूबसूरती को इस फिल्म में बहुत अच्छी तरह दिखाया गया है। 2005 में इस रेलवे को भी विश्व धरोहर की सूची में जगह मिली।

माथेरन हिल रेलवे

माथेरन मुंबई से करीब 110 किलोमीटर दूर है और मुंबई-पुणे रेलवे लाइन के करीब है। इस पहाड़ी स्थल की खोज 1850 में उस समय ठाणे के कलक्टर रहे हग पोइनट्ज मैलेट ने की थी। माथेरन का मतलब होता है 'शीर्ष पर जंगल'। 1907 से इस लाइन को चालू किया गया। नेरल से माथेरन तक की यात्रा में सिर्फ एक सुरंग है। कई जगह रोड यातायात इस ट्रेन के साथ साथ होता है। करीब 20 किलोमीटर की इस यात्रा में ट्रेन ज्यादा ऊंचाई पर तो नहीं जाती पर प्राकृतिक दृश्यों से भरपूर यह यात्रा बड़ी अनोखी होती है।

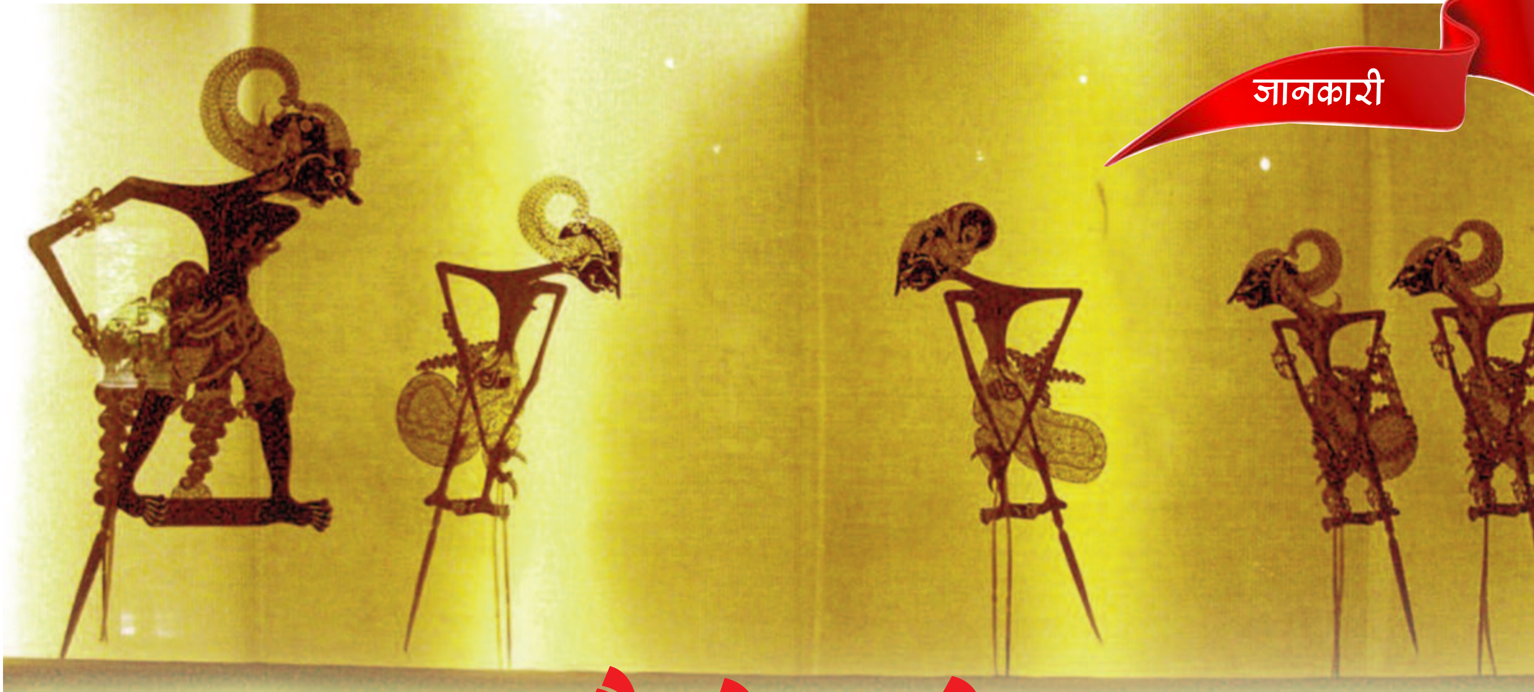

शैडो पपेट

जब से दुनिया बनी, तब से ही मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए साधन बनाने में लग गया। मन बहलाने को गुड्डे-गुड़ियां बने। बच्चे इनसे खेले। फिर इन्हीं गुड्डे-गुड़ियों को नचाया गया, तो बन गया पुतलों का खेल

पुतलों के सहारे खेल दिखाने या कहानी सुनाने के प्रमाण पूरे विश्व में उपलब्ध हैं। इसी तरह का एक खेल दक्षिण एशिया, खासकर इंडोनेशिया में बहुत प्रसिद्ध है, नाम है शैडो पपेट।

इंडोनेशिया के जावा और बाली में शैडो पपेट या वायांग कुलिट की शुरुआत की कहानी काफी रोमांचक है। वायांग इंडोनेशिया के परंपरागत थिएटर का नाम है। पहले वहां पुतलों से कहानियां सुनाने की परंपरा थी। जब भारतीय सभ्यता की आहट वहां पहुंची, तो इस खेल के लिए नई कहानियां मिलीं। खासकर रामायण और महाभारत ने उन्हें काफी कहानियां दीं। हालत यह हुई कि वहां की कहानियां पीछे रह गईं।

पहली बार ऐसे वायांग खेल का जिक्र सन 930 में आया है। तब वहां के राजा के कहने पर किसी गलिगी नामक व्यक्ति ने पुतलों से खेल दिखाया था। इस खेल में कहानी महाभारत के नायक भीम की थी।

पर समय बदला और वहां इसलाम का प्रभुत्व बढ़ा। ऐसे में बुत पूजा का विरोध हुआ और ऐसे खेलों को बंद कर दिया गया। एक बार वहां के तत्कालीन राजा की इच्छा परंपरागत वायांग खेल देखने की हुई। उसने इसलाम के बड़े नेताओं से बात की, पर देवी-देवताओं की कहानी पुतलों के रूप में सुनाने की इजाजत उन्हें नहीं मिली।

ऐसे में इस खेल के साथ नया प्रयोग किया गया और उन पुतलों की छाया से कहानी कहने की परंपरा शुरू हुई और इस तरह शैडो पपेट या वहां की स्थानीय भाषा में वायांग कुलिट का जन्म हुआ।

वायांग का अर्थ है पुतले और कुलिट का अर्थ है चमड़ा। इस खेल के लिए चमड़े और लकड़ी का प्रयोग कर पुतले बनाए जाते हैं। ये पुतले ऐसे होते हैं कि उनके हाथ घूम सकते हैं और ये छाया में चलते-फिरते प्रतीत होते हैं। हां इन पुतलों के साइड फेस ही बनाए जाते हैं। इनके पैर और हाथ लंबे होते हैं।

इस खेल के लिए परदे के पीछे से रोशनी की जाती है। पर्दे और उस रोशनी के बीच में पुतले होते हैं जिनकी छाया परदे पर पड़ती है और इस तरह खेल होता है। उस खेल को दिखाने वाले को वहां डालांग कहते हैं जिसका अर्थ है खेल दिखाने वाला। वही सारे पुतलों का संचालन करता है और डॉयलाग बोलता है। इसके लिए वह अपनी आवाज बदलकर भ्रम पैदा करता है कि बहुत सारे लोग पुतलों को स्वर दे रहे हैं।

इंडोनेशिया के एक द्वीप लोंबक ने इस खेल की एक अलग शैली विकसित की है। जिसे कजांगीलूंगा कहा जाता है। जावा की अपनी लोक कथाओं में पुनाकावन नामक कथा बहुत प्रसिद्ध है और लोग इसका मंचन बड़े चाव से देखते हैं।

पुस्तक परिचय

पुस्तक का नाम : हो गया उजाला
लेखक : डॉ. फकीर चंद्र शुक्ला
प्रकाशक : वनिका पब्लिकेशंस, बिजनौर, उत्तर प्रदेश
फोन नंबर : 9412713640
मूल्य : 100 रुपए

कुल 44 पेज की इस कहानी पुस्तक में कुल जमा 6 कहानियां हैं। खुद लेखक ने माना है कि ये कहानियां बच्चों के लिए नहीं, किशोरों के लिए है। इसलिए इन सारी कहानियों का मुख्य उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

प्रथम कहानी 'दृढ़ निश्चय' एक ऐसे बच्चे की कहानी है, जो परंपरागत भोजन को पसंद नहीं करता। उसका मन फास्ट फूड में लगा रहता है। यह बच्चा अराध्य ये तो समझता है कि फास्ट फूड सेहत के लिए अच्छा नहीं है, परंतु वह अपनी लालच नहीं छोड़ पाता। परिणाम स्वरूप एक दिन वह बहुत बुरी तरह बीमार पड़ जाता है, तब जाकर उसे लगता है कि फास्ट फूड के झमेले से बचना ही ठीक है।

दूसरी कहानी 'दीमक' आज के ट्यूशन सिस्टम पर एक प्रहार है। अमित को लगता है कि उसकी कक्षा के सारे बच्चे ट्यूशन लेते हैं। इसलिए वह उनका मुकाबला नहीं कर पाएगा। वह भी जिद करके अपने पिता से अपने लिए ट्यूशन रखवा तो लेता है, परंतु वह स्कूल के पढ़ाई और ट्यूशन का बीच तालमेल नहीं कर पाता और उसका परिणाम अच्छा नहीं आता। अंत में उसके चाचा आते हैं और वह उसे समझाते हैं कि बच्चा अपने स्कूल की पढ़ाई को ध्यान से करें तो उसे किसी तरह की ट्यूशन की जरूरत नहीं है।

अगली कहानी 'सही राह' एक ऐसे लड़के अमित की कहानी है, जो ओवर वेट है। उसे उसके दोस्त छोटा हाथी कहते हैं। वह बात-बात में थक जाता है। उससे कोई काम-धाम नहीं हो पाता। उसका चचेरा भाई जब उसके यहां आता है, तो वह उसकी दिनचर्या को ठीक करता है, जिससे अमित की सेहत सुधर जाती है।

ऐसे ही 'हो गया उजाला' कहानी एक बच्चे आर्यन की है, जो पढ़ाई से भटककर मोबाइल पर गेम खेलने में अपना समय बर्बाद करने लगता है और आखिरकार रात-रात भर जाकर खेलने से उसकी तबीयत खराब हो जाती है। जब उसे अस्पताल ले जाया जाता है, तब उसे अपनी गलती का एहसास होता है। वह प्रण करता है कि स्वस्थ होने के बाद गेम नहीं खेलेगा।

कहानी 'जन्मदिन' ऐसे लड़के सुमेर की है, पढ़ाई में तो अच्छा है ही, खेलकूद में भी किसी से कम नहीं है। उसे यह देखकर बहुत अजीब लगता कि उसके दोस्त अपने जन्मदिन पर बड़े-बड़े होटलों में पार्टी करते हैं और खूब पैसे बर्बाद करते हैं। लेकिन यह सब सुमेर को पसंद नहीं था। एक दिन जब वह घर लौट रहा था तो उसे गरीब बच्चों मिलते हैं, जो न स्कूल जा पाते थे न कुछ अच्छा खा पाते थे। तब सुमेर अपने दोस्तों के साथ अपना जन्मदिन न मनाकर गरीब बच्चों के साथ मनाता है।

अंतिम कहानी 'धन्यवाद' आराध्य नामक एक ऐसे बच्चे की कहानी है जिसके पापा का तबादला हो गया है परंतु उसे नया शहर बिल्कुल पसंद नहीं है। शहर में बहुत गरमी थी, इसलिए उसके पिता एक नया ऐसी लाते हैं। पर उस पर पक्षी बैठने लगे, जिससे एसी जल्दी ही खराब हो गया। अब यह अराध्य का काम था कि वह पक्षियों को उड़ाया करे।

एक दोपहर जब वह स्कूल से लौटता है, तो देखता है कि दो कबूतर बैठे हैं। वह उन्हें भगाने लगता है, तो वे वहां से नहीं उड़ते। तब उसे लगता है कि शायद ये भूखे-प्यासे हैं। वह उनके लिए दाना-पानी लाता है, तो पक्षी खाकर खुशी से उड़ने लगते हैं। तब अराध्य की समझ में आता है कि भूखे जन्तुओं का ध्यान रखना चाहिए।

सारी कहानियां अच्छी हैं, परंतु एक किशोर इस तरह की उद्देश्य भरी कहानियां शायद पसंद ना करें। कहानी की भाषा सरल और सुंदर है। कहानियों के साथ कुछ चित्र भी हैं। इन कहानियों को छोटे बच्चों को ध्यान में रखकर लिखा जाता तो शायद ज्यादा सफलता मिलती।

पुस्तक का नाम : यह काली गंगा है
लेखक : गोविंद शर्मा
चित्र : अबीरा बंदोपाध्याय
प्रकाशक : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, वसंत कुंज, नई दिल्ली
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in
मूल्य : 65

यह पुस्तक भारत के राजस्थान में हनुमानगढ़ से थोड़ी दूर कालीबंगा नामक एक गांव पर है जो एक पुरा स्थल है, जहां प्राचीन सभ्यता मिली थी।

सन 1952 में खुदाई के दौरान कालीबंगा नामक हड़प्पा कालीन पुरास्थल को उजागर किया गया था। उस समय के खोज अभियान से न केवल कालीबंगा बल्कि देश के कई नए पूरा स्थलों की जानकारी मिली थी।

कालीबंगा की खोज में पूरे 18 साल लगे थे। श्री अमलानंद घोष ने इसे सामने लाने के लिए विशेष कार्य किया था।

इस तरह पुस्तक में उस गांव की पूरी जानकारी है कि किस तरह वहां पर क्या-क्या होता था और वहां का क्या-क्या सामान हमें मिला, जिससे हमें उस सभ्यता के बारे में जानकारी मिली।

पूरी पुस्तक में चित्रों की भरमार है, जो इसके टेक्स्ट को सपोर्ट करते हैं। इस शानदार किताब को पढ़कर हम अपने सभ्यता के बारे में काफी कुछ जान सकते हैं।

इस इस स्थल को देखना चाहते हैं, उनके लिए यहां पर एक संग्रहालय भी बनाया गया है जिसके स्थापना 1985 में की गई थी

पुस्तक का नाम : जल है तो जीवन है
लेखिका : प्रभा पारीक
प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन राजा पार्क जयपुर।
फोन नंबर : 9314202010
मूल्य : 50 रुपए

यह एक बाल एकांकी है जिसका मुख्य उद्देश्य, बच्चों को जल के प्रति जागरूक करना है। इस एकांकी को चित्रों के माध्यम से भी सजाया गया है, जो इसे पठनीय बनाने में सहायक हैं।

कहानी की शुरुआत पानी सभा के आयोजन से होती है, जिसमें वरुण देव, सागर, मनुष्य सब भाग ले रहे हैं। यहां पानी दूषित करने को लेकर एक दूसरे पर ब्लेम गेम शुरू हो जाता है। बाद में नदियां और पृथ्वी भी शामिल हो जाती हैं और वे अपना दुखड़ा रोती हैं।

अंत में सागर देव कहते हैं कि पृथ्वी को बचाने के लिए मनुष्य को अपनी आदतें बदलनी होंगी, लापरवाही बंद करनी होगी, तभी यह पृथ्वी सुरक्षित रह पाएगी। 'जल बचाएं जीवन बचाएं', 'पानी को बचाइए, पानी आपको बचाएगा।'

अंत में एक कविता भी है, जो पढ़ने में बहुत ही अच्छी लगती है।

इस एकांकी की खासियत है कि इसे बच्चे बड़े आराम से मंच पर खेल सकते हैं। इसमें कठिन शब्दों का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं हुआ है और यह ध्यान रखा गया है कि जब बच्चे पढ़ें, तो उन्हें इसे समझने के लिए किसी की बड़े की या डिक्शनरी की जरूरत ना पड़े। एकांकी अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल है।

सूचना

समीक्षा के लिए पुस्तकों का स्वागत है। जो लेखक पुस्तकें नहीं भेजना चाहते, वे अपनी पुस्तकों की समीक्षा करवाकर मुखपृष्ठ के साथ अन्य जानकारियों (पुस्तक का नाम, लेखक का नाम, प्रकाशक और उसका पता, वेबसाइट या उसका फोन नंबर ताकि कोई खरीदना चाहे, तो संपर्क कर सके तथा मूल्य) हमें मेल करें। बिना किसी पूर्वाग्रह के उन्हें भी स्थान दिया जाएगा।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, रेनू मंडल जी ने

प्रथम पुरस्कार

चिड़िया

चूं-चूं करती नन्ही चिड़िया,
डाल-डाल पर जाती चिड़िया।
दाना लेकर आती चिड़िया,
चूज़ों की भूख मिटाती चिड़िया।

कभी आम पर कभी नीम पर,
छत-आंगन पर आती चिड़िया।
चूं-चूं करती नन्ही चिड़िया,
डाल डाल मंडराती चिड़िया।

सुबह सवेरे जल्दी उठकर,
मधुर गीत सुनाती चिड़िया।
अपनी प्यारी चीं-चीं-चीं से,
सबका मन लुभाती चिड़िया।

चूं-चूं करती नन्हीं चिड़िया,
डाल डाल पर आती चिड़िया।

नाम : रुषिता वेदुला
उम्र : 15, कक्षा : 10,
स्कूल : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल झारसुगुगुड़ा, ओड़िशा

उड़ने को तैयार

द्वितीय पुरस्कार

बुलबुल आज भी थी तैयार
ताकि सीख सके कैसे भरते हैं उड़ान,
वह भी ओरो की तरह उड़कर
गगन को चूमकर, कर सके उसे प्यार।।

पंख भले ही अभी
छोटे हों बुलबुल के, मगर
यूं ही सीखते-समझते
जरूर एक दिन भरेगी ऊंची उड़ान।।
आज भी यूं ही बैठकर देख रही थी
औरों को कैसे भरते हैं वह उड़ान ,
शुरू तो बुलबुल ने अब ही करा है
समझने को कि कैसे भरी जाती है उड़ान।।

डरती थी पहले कि कहीं
उड़ने से पहले ही चली ना जाए उसकी जान।
दूसरों को देखकर,उनसे सीखकर
समझ आने लगा था उसे कि
अगर भरी उड़ान तो मिलेगा बहुत मान।
बुलबुल भी जानती थी कि
अगर हो गई नाकामयाब उड़ान भरने में
तो,उसी के साथी ले लेंगे उसकी जान।।

एक नहीं दो नहीं कई लोगों ने सिखाया
उसे, कैसे भरी जाती है उड़ान।
कदम तो घोंसले से बाहर रहती है
मगर सोचती है उड़ा न ले उसे कोई तूफान।।
अभी तो देख ,सीख रही है
जल्द ही हौसला कर
भरेगी अपनी ऊंची उड़ान,
तभी तो लोग देंगे उस पर ध्यान।।

बुलबुल अभी भी सीखने को है तैयार,
ताकि गगन को चुमकर कर सके उसे प्यार।।

नाम : साक्षी भंडारी
उम्र : 14, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

दोस्त और दोस्ती

तृतीय पुरस्कार

कुछ यादें थी पुरानी
बातें हैं निभानी
किए हैं कितने वादे
दी हैं कितनी कसमें।

किया था इतना इंतजार
देखो आई दोस्ती में दरार
कैसे मनाऊं उस दोस्त को
जिसके साथ बांटे थे
खुशी और गम हजार।

ए दोस्त अब छोड़ भी दे
यह नाराजगी
क्या पता किस मोड़ पर
जिंदगी लाकर खड़ा कर दे हमें।

नाम : बबीता जोशी
उम्र : 15, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**